

বাইজৰ কথা বাইজৰ মাজলৈ সাপ্তাহিক
জন জন বিচাৰ

जन जन की बात जन जन तक
साप्ताहिक
# जन जन विचार
WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER
Language : Hindi, Assamese & English
WEBSITE : www.janjanvichar.in



VOICE OF ALL, FOR ALL
WEEKLY
JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 18 September 2026 :: Year-1 Vol-36 Issue-15 :: शुक्रवार । 18 सितंबर 2026 । शक संवत 1948 । भाद्रपद । शुक्ल । सप्तमी । :: पृष्ठ-20 । मूल्य - 15 रुपए


## जन चिंतन
धनेश्वर चौधरी

### यूपीआई पर शुल्क
## कौन चुकाएगा जरूरत की कीमत

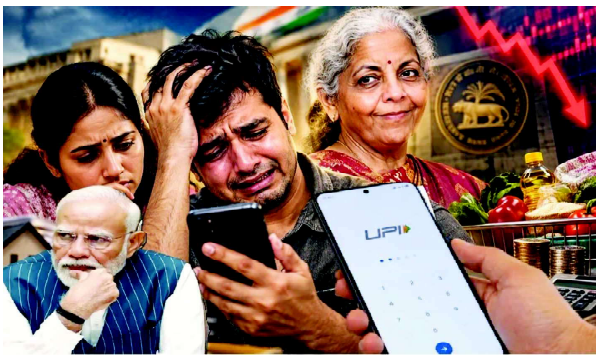
यूपीआई ने भारत में पैसे का मतलब ही बदल दिया। जेब में नकद हो या न हो, मोबाइल हाथ में हो तो भुगतान हो जाता है। चाय की दुकान से लेकर बड़े बाजार तक-यूपीआई अब सुविधा नहीं, रोजमर्रा की जरूरत बन चुका है। ऐसे में छह साल बाद 2,000 रुपए से अधिक के चुनिंदा व्यापारी भुगतानों पर 0.4 प्रतिशत व्यापारी शुल्क लगाने का फैसला स्वाभाविक रूप से सवाल खड़ा करता है-आखिर अब इसकी जरूरत क्यों पड़ी?

सरकार का तर्क है कि यूपीआई का कारोबार बेहिसाब बढ़ चुका है। इसके पीछे बैंक, तकनीकी ढांचा, सर्वर, साइबर सुरक्षा और धोखाधड़ी रोकने की लगातार बढ़ती लागत है। अगस्त में ही करीब 24.5 अरब यूपीआई लेन-देन हुए। सरकार का कहना है कि इतनी विशाल व्यवस्था को हमेशा बिना किसी स्थायी आय-स्रोत के चलाना लंबे समय में मुश्किल होगा।

यह तर्क समझ में आता है। लेकिन जनता का सवाल भी उतना ही जायज है-इसकी कीमत आखिर कौन देगा?

सरकार कहती है कि ग्राहक से सीधे कोई शुल्क शेष पृष्ठ 2 पर

# यूपीआई : निशाने पर व्यापारी




जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

मोबाइल निकाला, क्यूआर कोड पर कैमरा साधा और भुगतान चंद सेकेंड में पूरा। भारत में डिजिटल भुगतान की यह सहज आदत अब करोड़ों लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन चुकी है। लेकिन छह साल से लगभग शुल्क-मुक्त चल रही इस व्यवस्था में अब एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है। 15 अक्टूबर 2026 से 2,000 रुपए से अधिक के व्यापारी भुगतान पर 0.4 प्रतिशत व्यापारी शुल्क लागू होगा। हालांकि इस शुल्क का सीधा बोझ ग्राहक पर डालने की अनुमति नहीं होगी। सरकार ने कहा है कि वह व्यवस्था पर नजर रखेगी और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करेगी कि व्यापारी इस लागत को ग्राहकों से न वसूलें।

यह बदलाव केवल कुछ पैसे के शुल्क की कहानी नहीं है। इसके पीछे भारत के सबसे बड़े डिजिटल भुगतान तंत्र को लंबे समय तक चलाने की आर्थिक चुनौती छिपी है। सवाल यह भी है कि जब भुगतान व्यवस्था का इस्तेमाल लगातार बढ़ रहा है, तो उसके रखरखाव, सुरक्षा और तकनीकी विस्तार का खर्च आखिर कौन उठाएगा?

**हर भुगतान पर नहीं लगेगा शुल्क**

सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि यूपीआई पर हर भुगतान के लिए शुल्क नहीं लगेगा।

2,000 रुपए तक के भुगतान शुल्क से बाहर रहेंगे। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को भेजे जाने वाले धन पर भी यह शुल्क लागू नहीं होगा। रोजमर्रा के छोटे भुगतानों को राहत देने की व्यवस्था की गई है। छोटे क्यूआर-आधारित व्यापारियों के लिए भी छूट का प्रावधान रखा गया है।

इसका मतलब यह है कि दूध, सब्जी, किराना, चाय या छोटी-मोटी खरीदारी के लिए क्यूआर के जरिए होने वाले अधिकांश कम राशि के भुगतान पर तत्काल कोई नया बोझ नहीं आएगा। लेकिन जैसे-जैसे भुगतान की राशि बढ़ेगी, नई शेष पृष्ठ 3 पर

## ? कुछ सवाल

### क्या सुरक्षित रहेगी ग्राहक की जेब?

यही इस पूरे बदलाव की सबसे बड़ी परीक्षा है। सरकार का कहना है कि शुल्क का बोझ ग्राहक पर डालने की अनुमति नहीं होगी और इसके पालन पर नजर रखी जाएगी। भुगतान सेवा देने वाली संस्थाओं के साथ भी इस विषय पर बातचीत की गई है। शेष पृष्ठ 5 पर

### क्या फिर लौटेगी नकदी?

यह आशंका भी सामने आ रही है कि अतिरिक्त लागत से कुछ व्यापारी डिजिटल भुगतान की जगह नकदी को प्राथमिकता दे सकते हैं। खुदरा व्यापार संगठनों ने ऐसी चिंता जताई है, खासकर कम लाभ वाले कारोबारों के संदर्भ में। दूसरी ओर, सरकार का कहना है कि नए शुल्क से नकद लेन-देन में कोई बड़ी वृद्धि होने की उम्मीद नहीं है। शेष पृष्ठ 5 पर

### क्यों लगाया शुल्क?

यही इस बदलाव का सबसे बड़ा आर्थिक प्रश्न है।

यूपीआई ने भारत में भुगतान की तस्वीर बदल दी है। अगस्त 2026 में यूपीआई पर करीब 24.5 अरब लेन-देन हुए, जिनका कुल मूल्य लगभग 29.8 लाख करोड़ रुपए रहा। इतने विशाल तंत्र को चलाने के लिए बैंकिंग ढांचे, तकनीकी प्रणालियों, साइबर सुरक्षा और भुगतान प्रसंस्करण में लगातार निवेश की जरूरत होती है। शेष पृष्ठ 5 पर

# 300 करोड़ पार! 'हनुमान अंश' ने बदल दी कमाई की कहानी

जन जन विचार
...✍ लखनऊ/अमेठी

कभी बॉक्स ऑफिस पर धीमी शुरुआत और अब दुनियाभर में 300 करोड़ रुपए का आंकड़ा पार। 'हनुमान अंश' ने 41 दिनों के सफर में कमाई की ऐसी कहानी लिख दी है, जिसकी चर्चा अब फिल्म कारोबार से लेकर दर्शकों तक हो रही है। महज करीब 2 करोड़ रुपए के बजट में तैयार इस आध्यात्मिक फिल्म का वैश्विक कारोबार 300 करोड़ रुपए के पार



पहुंच गया है। यानी शुरुआती लागत की तुलना में फिल्म ने कई गुना अधिक कारोबार किया है।

विशाल चतुर्वेदी के निर्देशन और शोभिनव सत्या के अभिनय वाली 'हनुमान अंश' नीम करौली बाबा के जीवन से प्रेरित आध्यात्मिक कथा पर आधारित बताई गई है। फिल्म ने शुरुआत में भले ही तेज रफ्तार नहीं पकड़ी, लेकिन दर्शकों की प्रतिक्रिया के साथ इसका कारोबार लगातार बढ़ता गया। 41वें दिन तक पहुंचते-पहुंचते फिल्म ने वैश्विक स्तर पर करीब 300 करोड़ रुपए का आंकड़ा पार कर लिया। शेष पृष्ठ 7 पर

:: 2 करोड़ ➔300 करोड़+ | 41 दिन | विदेशों से 20.25 करोड़ | 18 सितंबर को तेलुगु रिलीज ::

# कुल्हाड़ियों की छांव में जंगल

जन जन विचार



...✍ डॉ मुकेश कुमार

**ललित निबंध**

सुबह की पहली किरण जब खिड़की के धुंधले शीशे से छनकर कमरे के भीतर उतरती है, तो उसमें वह पुरानी आत्मीय गर्माहट महसूस नहीं होती, जो कभी बाल्यावस्था में नीम के घने पत्तों से छनकर चेहरे पर भीनी मुस्कान की तरह बिखरा करती थी। उस दौर में भोर का अर्थ किसी घड़ी के अलार्म से तय नहीं होता था, बल्कि चिड़ियों के अप्रतिम कलरव, गीली माटी की सोंधी सुगंध और पीपल के विशाल पत्तों के उस मर्मर स्वर से हुआ करता था, जो मां की मधुर लोरी से भी अधिक सुकूनदायक लगता था। किंतु आज की यह नव-प्रभात किसी विहंगम गीत से नहीं, बल्कि कंक्रीट के गगनचुंबी जंगलों में दिन-रात गूंजती गाड़ियों की कर्कश घरघराहट, कारखानों की चिमनियों से उठते जहरीले धुएं के काले गुबार और आपाधापी के शोर से हमारा स्वागत करती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो काल की सुई किसी ऐसी अनाम दिशा में घूम गई है, जहां से प्राकृतिक हरियाली केवल पुरानी स्मृतियों, संग्रहालयों या इतिहास की किताबों के चित्रों में सिमटकर रह गई है। हम आधुनिकता और विकास की जिस अंधी दौड़ में बेतहाशा भागे जा रहे हैं, उसमें हमने भौतिक साधनों को पा लेने का एक मिथ्या भ्रम तो भले ही पाल लिया हो, परंतु अपनी आत्मा के जिस शाश्वत अंश को खो दिया है, उसकी भरपाई ब्रह्मांड की कोई भी अपरिमित दौलत कभी नहीं कर सकती।

कभी आपने शांतचित्त होकर विचार किया है कि जब किसी कुल्हाड़ी के एक ही निर्दयी प्रहार से कोई विशाल बरगद या पीपल का प्राचीन वृक्ष धरती पर धराशायी होता है, तो केवल लकड़ी का एक बेजान तना मात्र नहीं गिरता? उस कठोर आघात के साथ ही गिर पड़ता है सैकड़ों बेजुबान पक्षियों का वर्षों पुराना सुरक्षित आशियाना, छिन-भिन्न हो जाती है चंचल गिलहरियों की निश्छल दौड़-धूप, और चुपचाप अपनी अंतिम सांसें तोड़ देती है वह शीतल छाया जो न जाने कितने थके-हारे पथिकों के संताप मिटाया करती थी। आज तो पथिक स्वयं चमचमाती सड़कों पर तेज रफ्तार गाड़ियां दौड़ा रहे हैं, उन्हें क्षण भर के लिए ठहरकर उस पेड़ से संवाद करने की फुर्सत कहां? जहां कभी पीपल की घनी छांव में जीवन का आनंद बरसता था, वहां अब डामर और जलते हुए सीमेंट की तप्त परतें बिछ गई हैं। विस्तृत जंगल अब सिमटकर केवल सरकारी फाइलों, राष्ट्रीय उद्यानों और प्राथमिक विद्यालयों के मानचित्रों में बंद होकर रह गए हैं। वे महान जंगल, जो कभी इस पूरी वसुंधरा के प्राकृतिक फेफड़े बनकर जीवनदायिनी प्राणवायु बांटा करते थे, आज स्वयं ही जीवन और अस्तित्व के दारुण संकट से घुट-घुटकर जूझ रहे हैं। जहां कभी गंभीर वन में गूंजती शेर की ओजस्वी दहाड़ और हिरणों की कलोल करती चौकड़ी में सजीव जीवन का उल्लास बहता रहता था, वहां अब केवल कुल्हाड़ियों की अनवरत ठक-ठक और आरी की हृदयविदारक चीत्कार ही चहुं ओर सुनाई देती है।



एक दिन जब मैं अपने पैतृक गांव के अति प्राचीन और शांत ताल के किनारे अकेला बैठा था, तो सहसा हवा का एक मद्धिम झोंका आकर मेरे कानों में कुछ आत्मीय कहने लगा। उस समीर के स्पर्श में वह पुरातन शीतलता बिल्कुल नहीं थी जो बरसों पहले मन-प्राण को तृप्त कर दिया करती थी। ऐसा लगा मानो वह हवा स्वयं भीतर ही भीतर जल रही हो और अपनी इस लाचार बेबसी पर चुपचाप अश्रु बहा रही हो। ठीक पास ही की एक टूटी-फूटी बेंच पर बैठे गांव के एक वयोवृद्ध किसान ने अपनी लाठी को जमीन पर टेकते हुए एक गहरी और ठंडी सांस ली। उन्होंने मेरी ओर उदास नजरों से देखा और अत्यंत भावुक स्वर में बोले, 'बाबूजी, अब वे आत्मीय दिन कहां चले गए? जब हम छोटे बच्चे थे, तो इस विशाल पोखर के जल में पूरा नीला आसमान और उसके अनगिनत तारे झिलमिलाया करते थे। तट पर सफेद बगुले ध्यानमग्न साधु की भांति शांत बैठे रहते थे और छोटी-छोटी रंगीन मछलियां पानी की सतह पर आकर मुग्ध हवा से बातें किया करती थीं। आज न तो इस पोखर में वह पावन पानी बचा है और न ही नीले स्वच्छ आसमान का वह दिव्य रंग। सब कुछ धूसर और मलीन हो गया है, जैसे किसी निर्दयी ने इस पूरी प्रकृति पर निराशा की राख छिड़क दी हो। उनकी उन झुर्रीदार नयनों में जो गहरा अवसाद तैर रहा था, वह केवल उस मृतप्राय पोखर का नहीं था, बल्कि इस संपूर्ण मरती हुई प्रकृति की अनिर्वचनीय व्यथा को उजागर कर रहा था। **(क्रमशः)**

# पत्नी के हत्यारे को आजीवन कारावास

जन जन विचार

...✍ बिश्वनाथ चारिआली

पत्नी की हत्या कर उसके शव को फंदे से लटकाकर घटना को आत्महत्या का रूप देने के मामले में बिश्वनाथ की अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत ने आरोपी सुल्तान प्रजा को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।

मामला वर्ष 2022 का है। बिहाली थाना क्षेत्र के बरगांग चाय बागान की इटाखोला लाइन निवासी सुल्तान प्रजा पर अपनी पत्नी सुमी प्रजा की हत्या करने का आरोप था। अभियोजन के अनुसार, हत्या के बाद आरोपी ने अपराध छिपाने के उद्देश्य से शव को चादर के सहारे घर की छत की लकड़ी से लटका दिया, ताकि घटना आत्महत्या जैसी प्रतीत हो।

घटना के बाद मृतका के भाई गोपी प्रजा ने बिहाली थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई। इसके आधार पर भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत मामला संख्या 8/2022 दर्ज किया गया। पुलिस ने जांच पूरी करने के बाद आरोपपत्र अदालत में दाखिल किया। मामले की सुनवाई बिश्वनाथ के अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश अभिजीत बरुवा की अदालत में हुई।

## राशिफल

18 से 24 सितंबर, 2026।। विक्रम संवत 2083-**मास** : भाद्रपद, **पक्ष** : शुक्ल, **तिथि** :सप्तमी

**मेष :** सप्ताह कामकाज के लिहाज से सक्रिय रहेगा। रुके हुए कार्य आगे बढ़ सकते हैं। धन संबंधी मामलों में जल्दबाजी से बचें। परिवार में किसी बात को लेकर मतभेद हो सकता है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

**वृषभ :** कारोबार में लाभ के अवसर मिलेंगे। नौकरीपेशा लोगों को नई जिम्मेदारी मिल सकती है। खर्च बढ़ने की संभावना है, इसलिए बजट संभालकर चलें। दांपत्य जीवन में मधुरता रहेगी।

**मिथुन :** नई योजनाओं पर काम शुरू करने का समय है। कार्यक्षेत्र में आपकी बात को महत्व मिलेगा। आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है। किसी पुराने मित्र से मुलाकात मन प्रसन्न करेगी।

**कर्क :** यह सप्ताह आपके लिए महत्वपूर्ण बदलाव लेकर आ सकता है। काम में उत्साह बढ़ेगा, लेकिन क्रोध पर नियंत्रण जरूरी है। परिवार से जुड़ा कोई निर्णय सोच-समझकर लें। अनावश्यक खर्च से बचें।

**सिंह :** मेहनत का परिणाम मिलने लगेगा। नौकरी और कारोबार में प्रगति के अवसर बनेंगे। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। निवेश के मामले में सावधानी रखें। घर में सुखद वातावरण रहेगा।

**कन्या :** कार्यक्षेत्र में आपकी क्षमता सामने आएगी। आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। प्रेम संबंधों में संवाद बढ़ेगा। स्वास्थ्य को लेकर दिनचर्या व्यवस्थित रखें।

**तुला :** पुराने काम पूरे करने और नई योजना बनाने का अच्छा समय है। व्यापार में लाभ हो सकता है। पारिवारिक मामलों में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी। किसी यात्रा की योजना बन सकती है।

**वृश्चिक :** काम का दबाव बढ़ सकता है, लेकिन आपकी सूझबूझ से परिस्थितियां संभल जाएंगी। धन संबंधी फैसले सोच-समझकर लें। रिश्तों में पारदर्शिता रखें। मानसिक तनाव को हावी न होने दें।

**धनु :** आत्मविश्वास बढ़ेगा और नए लोगों से संपर्क लाभकारी हो सकता है। नौकरी में बदलाव या नई जिम्मेदारी का अवसर मिल सकता है। आर्थिक स्थिति संतोषजनक रहेगी। यात्रा के योग बन सकते हैं।

**मकर :** कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियां मिलेंगी। मेहनत का अच्छा परिणाम मिलने की संभावना है। शिक्षा से जुड़े लोगों के लिए समय उपयोगी रहेगा। परिवार में किसी सदस्य की उपलब्धि खुशी देगी।

**कुंभ :** आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। अचानक खर्च सामने आ सकता है। नौकरी में अपनी बात स्पष्ट रखें। मित्रों का सहयोग मिलेगा। पुराने विवाद को बातचीत से सुलझाने का प्रयास सफल हो सकता है।

**मीन :** सप्ताह की शुरुआत थोड़ी व्यस्त रहेगी, लेकिन बाद में परिस्थितियां बेहतर होंगी। रुका हुआ धन मिलने की संभावना है। नौकरी और व्यापार में अवसर मिलेंगे। परिवार के साथ समय बिताने से मन प्रसन्न रहेगा।

### सप्ताह के पर्व/त्योहार

**18 सितंबर (शुक्रवार) :** महालक्ष्मी व्रत प्रारंभ
**19 सितंबर (शनिवार) :** राधाष्टमी
**20 सितंबर (रविवार) :** महारविवार व्रत
**21 सितंबर (सोमवार) :** दशावतार व्रत
**22 सितंबर (मंगलवार) :** पद्मा एकादशा व्रत
**24 सितंबर (गुरुवार) :** प्रदोष व्रत

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

पृष्ठ 1 का शेषांश...

## यूपीआई पर शुल्क...

नहीं लिया जाएगा। 2,000 रुपए तक के व्यापारी भुगतान और छोटे व्यापारियों के लिए यूपीआई अब भी निःशुल्क रहेगा तथा लगभग 96 प्रतिशत व्यापारी लेन-देन पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

फिर भी बाजार की अपनी भाषा होती है। व्यापारी की लागत बढ़ेगी तो वह कीमत, छूट या खरीद की शर्तों में बदलाव कर सकता है। यानी रसीद पर शुल्क न लिखा हो, फिर भी उसका असर कीमत में दिखाई दे सकता है।

इसलिए सरकार की असली जिम्मेदारी केवल शुल्क लगाना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि यूपीआई को टिकाऊ बनाने के नाम पर आम आदमी की जेब धीरे-धीरे महंगी न हो जाए।

यूपीआई भारत की डिजिटल ताकत है। इसे कमाई का साधन बनाने से पहले यह देखना होगा कि कमाई व्यवस्था की हो, जनता की परेशानी की नहीं।

## धन दिशा



### रिटायरमेंट की जल्द से जल्द सोचें

पिछले हफ्ते हमने वादा किया था — आज रिटायरमेंट की बात करेंगे। यह वादा आज पूरा करते हैं।

एक आम सोच यह है, 'अभी तो 30-35 साल की उम्र है, रिटायरमेंट तो बहुत दूर है।' यही सोच बाद में सबसे भारी पड़ती है। रिटायरमेंट भारत में आमतौर पर 58-60 साल में होता है। लेकिन उस वक्त जितना पैसा चाहिए, उसे जमा करने के लिए 20-25 साल चाहिए और वह समय अभी है।

कितना चाहिए होगा? एक सरल अनुमान- अगर आज आपका महीने का खर्च 30,000 रुपए है, तो 25 साल बाद महंगाई के हिसाब से वही खर्च एक लाख रुपए से ऊपर हो सकता है। रिटायरमेंट के बाद 20-25 साल जीने के लिए आपको कम से कम 2-3 करोड़ रुपए की जरूरत हो सकती है। यह सुनकर डरें नहीं- एसआईपी की ताकत से यह मुमकिन है। 30 की उम्र में 3,000 रुपए महीना वही काम करता है जो 45 की उम्र में 15,000 रुपए महीना करता है।

**एनपीएस :** सबसे कम चर्चित, सबसे काम का - नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) सरकार की योजना है और रिटायरमेंट के लिए बनी है। इसमें हर महीने थोड़ा-थोड़ा जमा होता है और रिटायरमेंट पर एकमुश्त रकम तथा हर महीने पेंशन दोनों मिलते हैं। सबसे बड़ी बात, इसमें धारा 80 सीसीडी (1बी) के तहत 50,000 रुपए अतिरिक्त टैक्स छूट मिलती है, जो 80 सी की 1.5 लाख रुपए की सीमा से बिल्कुल अलग है।

**ईपीएफ पर्याप्त नहीं है :** नौकरीपेशा लोग अक्सर सोचते हैं कि ईपीएफ काफी है। लेकिन ईपीएफ में जो रकम जमा होती है, वह अक्सर 15-20 साल की रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त नहीं होती। ईपीएफ के साथ-साथ एसआईपी या एनपीएस ज़रूर चलाएं-दोनों अलग-अलग काम करते हैं।

कब शुरू करें? आज। अगर नौकरी शुरू हो गई है तो इसी महीने एनपीएस खाता खोलें। अगर व्यापार है तो म्यूचुअल फंड एसआईपी शुरू करें। त्योहारी बोनस या उपहार में मिली रकम को एकमुश्त इसमें लगाएं-एक बार की यह आदत सालों बाद बड़ा फर्क करती है।

रिटायरमेंट कोई दूर का सपना नहीं, यह एक गणित है। शुरुआत जल्दी करें, रकम छोटी रखें, नियमित रहें। बाकी काम समय कर देगा।

**अगले हफ्ते :** त्योहार का मौसम आ रहा है, खुशियां मनाएं, लेकिन ईएमआई के जाल से बचें। अगले हफ्ते इसी पर बात करेंगे।

इस कॉलम के लिए आपका कोई सवाल है? हमें भेजिए

**-कोमल जैन**

पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट, संस्थापक, वेल्थप्लायर्स- मो. 9004510577

## आरएसएस का 'प्रमुख नागरिक सम्मेलन' बीस को

**गुवाहाटी।** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के शताब्दी वर्ष 2025-26 के अवसर पर शुक्लेश्वर भाग, गुवाहाटी महानगर की ओर से 'प्रमुख नागरिक सम्मेलन' का आयोजन 20 सितंबर को किया जाएगा। सम्मेलन साउथ प्वाइंट स्कूल, गुवाहाटी में शाम 4 बजे आयोजित होगा।

सम्मेलन में असम क्षेत्र के माननीय संघचालक डॉ. उमेश चक्रवर्ती उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण, भारतीय संस्कृति के संरक्षण तथा सामाजिक सहभागिता से जुड़े विषयों पर नागरिकों की भागीदारी बढ़ाना बताया गया है। महानगर संघचालक गुरुप्रसाद मेधी और महानगर कार्यवाह डॉ. धीरेन दास पानिका ने यह जानकारी दी है।

# तालाब से बिहार निवासी मजदूर का शव बरामद

**जन जन विचार**
*...✍ नगांव*

नगांव जिले के कामपुर शुगर मिल के पास एक तालाब से गुरुवार को बिहार निवासी एक व्यक्ति का शव बरामद होने से इलाके में सनसनी फैल गई। मृतक की पहचान दीपक ठाकुर के रूप में हुई है। बताया गया है कि वह कामपुर में चल रहे सड़क निर्माण कार्य में मजदूरी कर रहा था।

**हत्या की आशंका**

स्थानीय लोगों ने तालाब में शव को पानी पर तैरते देखा और इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को बाहर निकालकर कब्जे में लिया। मृतक के सिर और गर्दन पर चोट के निशान मिलने की बात सामने आई है, जिससे उसकी मौत को लेकर संदेह गहरा गया है।

मृतक के भाई ने आशंका जताई है कि दीपक की हत्या करने के बाद शव को तालाब में फेंका गया होगा। हालांकि, पुलिस ने अभी हत्या की पुष्टि नहीं की है। मौत के वास्तविक कारण का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही चल सकेगा। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और मृतक के संपर्कों तथा घटना से जुड़े अन्य पहलुओं की जानकारी जुटाई जा रही है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

# बिश्वनाथ में गोरखा समुदाय ने मनाया तीज उत्सव

**जन जन विचार**
*...✍ वेददीप उपाध्याय बिश्वनाथ चारिआली*

बिश्वनाथ चारिआली नगर क्षेत्र में गोरखा समुदाय की सामाजिक और सांस्कृतिक एकजुटता का परिचय देते हुए गोरखा समन्वय समिति के तत्वावधान में 13वां तीज उत्सव श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। वर्ष 2013 में गठित समिति द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में बृहत्तर बिश्वनाथ चारिआली के 99 गोरखा परिवारों की 116 बेटियों और बहुओं ने भाग लिया।

तीज की परंपरा के अनुरूप महिलाओं ने निर्जला व्रत रखकर भगवान शिव की पूजा-अर्चना की। धार्मिक अनुष्ठान संस्कृत विद्वान एवं गोरखा समन्वय समिति के अध्यक्ष लोकनाथ शास्त्री ने संपन्न कराया।

कार्यक्रम के दौरान 75 वर्ष से अधिक आयु की पांच बुजुर्ग महिलाओं सरस्वती देवी, भागीरथी देवी, विष्णुमाया देवी, नरमाया देवी और खीनमाया देवी को सम्मानित किया गया। आयोजकों ने उनके दीर्घ जीवन और स्वस्थ रहने की कामना की। उत्सव में धार्मिक आस्था के साथ गोरखा लोकसंस्कृति की भी जीवंत झलक देखने को मिली। प्रेम विश्वकर्मा, पूर्णिमा पोखरेल, दीपिका उपाध्याय, चित्रा पौडेल, कल्पना छेत्री, रिंकू पौडेल, शीला गौतम और रंजू शर्मा सहित कलाकारों ने लोकसंगीत प्रस्तुत कर माहौल को उत्सवमय बना दिया। कार्यक्रम के संचालन में समिति के पदाधिकारियों और सदस्यों के साथ साधारण सचिव चंद्र उपाध्याय, भीमलाल शर्मा, सबिंद्र शर्मा, दुर्गा उपाध्याय, नित्यानंद दहाल तथा तीज उत्सव समिति की अध्यक्ष जानुका सुतार और सचिव इंदिरा देवी सहित कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

## पृष्ठ 1 का शेषांश...

### यूपीआई : निशाने पर व्यापारी

व्यवस्था का प्रभाव सामने आने लगेगा।

**10,000 रुपए देने पर शुल्क कितना?**

मान लीजिए कोई ग्राहक किसी पात्र व्यापारी को 10,000 रुपए का भुगतान करता है। 0.4 प्रतिशत की दर से व्यापारी शुल्क 40 रुपए होगा। 20,000 रुपए के भुगतान पर यह 80 रुपए और 50,000 पर 200 रुपए होगा। 75,000 या उससे अधिक के पात्र भुगतान पर शुल्क की अधिकतम सीमा 300 रुपए प्रति लेन-देन रखी गई है। यानी भुगतान राशि इससे ऊपर जाने पर भी शुल्क 300 रुपए से अधिक नहीं बढ़ेगा।

महत्वपूर्ण बात यह है कि यह राशि ग्राहक के खाते से अलग से काटे जाने वाला शुल्क नहीं है। निर्धारित व्यवस्था में इसका भार व्यापारी पक्ष पर रहेगा।

**जरूरी सेवाओं के लिए अलग व्यवस्था**

रेलवे, दूरसंचार, बीमा और ईंधन जैसी कुछ आवश्यक सेवाओं के लिए प्रतिशत के बजाय 5 रुपए का निश्चित शुल्क रखा गया है। इससे बड़े भुगतान पर शुल्क अनियंत्रित रूप से बढ़ने से बचाने की कोशिश की गई है।

पूंजी बाजार से जुड़े पात्र भुगतानों के लिए अलग दर रखी गई है-0.02 प्रतिशत, जिसकी अधिकतम सीमा 300 रुपए है। इसका असर शेयर, निवेश और अन्य वित्तीय भुगतानों से जुड़े कारोबार पर पड़ेगा।

**छोटे दुकानदारों को राहत**

यूपीआई की सबसे बड़ी सफलता केवल बड़े दुकानों और ऑनलाइन कारोबार में नहीं है। इसका वास्तविक विस्तार छोटे दुकानदारों, रेहड़ी-पटरी वालों, स्थानीय कारोबारियों और गांव-कस्बों के व्यापारियों तक हुआ है।

यदि छोटे भुगतान पर भी शुल्क लगा दिया जाता, तो डिजिटल भुगतान के सबसे बड़े आधार पर ही लागत का दबाव पड़ सकता था। इसलिए छोटे क्यूआर-आधारित व्यापारियों के लिए छूट का प्रावधान महत्वपूर्ण है। उपलब्ध विवरणों के अनुसार, प्रति माह 1 लाख रुपए तक क्यूआर के जरिए यूपीआई से कमाई करने वाले छोटे व्यापारियों को इस व्यवस्था में विशेष राहत दी गई है।

**रुपे को मिलेगा बढ़ावा**

नई व्यवस्था में रुपे डेबिट कार्ड को शुल्क से बाहर रखा गया है। इससे घरेलू भुगतान नेटवर्क को एक अतिरिक्त प्रोत्साहन मिलने की संभावना है। वित्त मंत्रालय ने हालांकि उन आरोपों को खारिज किया है कि नई व्यवस्था किसी विदेशी दबाव में लाई गई है। मंत्रालय का कहना है कि यूपीआई से जुड़े रुपे क्रेडिट कार्ड के मौजूदा नियमों के अनुरूप ही व्यवस्था बनाई गई है।

इसलिए रुपे को मिलने वाली संभावित बढ़त को इस व्यवस्था का एक अलग आर्थिक पहलू माना जा सकता है, लेकिन इसे शुल्क लागू करने का घोषित एकमात्र उद्देश्य मानना उचित नहीं होगा।

**यूपीआई के सामने दोहरी चुनौती**

भारत ने दुनिया को यह दिखाया कि डिजिटल भुगतान केवल बड़े शहरों और संपन्न वर्ग की सुविधा नहीं, बल्कि आम आदमी का रोजमर्रा का माध्यम भी बन सकता है। अब यूपीआई अपने अगले चरण में प्रवेश कर रहा है।

एक तरफ उसके सामने आर्थिक टिकाऊपन की चुनौती है। दूसरी तरफ जनविश्वास और कम लागत बनाए रखने की जरूरत है।

सरकार के लिए सबसे बड़ी परीक्षा होगी कि व्यापारी पर लगाए गए शुल्क का अप्रत्यक्ष बोझ ग्राहक तक न पहुंचे। भुगतान कंपनियों के लिए चुनौती होगी कि शुल्क से मिलने वाली राशि का इस्तेमाल बेहतर तकनीक, सुरक्षा और सेवा में हो। व्यापारियों के लिए सवाल होगा कि नई लागत को अपने कारोबार में कैसे समायोजित करें।

और ग्राहक के लिए फिलहाल संदेश साफ है-यूपीआई बंद नहीं हो रहा, न ही हर भुगतान महंगा हो रहा है। लेकिन 'हर लेन-देन मुफ्त' वाला दौर अब धीरे-धीरे बदल रहा है।

संपादकीय

## नवोदय पर भाषा की राजनीति

तमिलनाडु में नवोदय विद्यालयों का विवाद एक सीधा सवाल पूछ रहा है-भाषा की लड़ाई में बच्चों का भविष्य आखिर क्यों खड़ा किया जाए? सर्वोच्च न्यायालय ने तमिलनाडु सरकार की वह याचिका खारिज कर दी, जिसमें प्रत्येक जिले में जवाहर नवोदय विद्यालय के लिए भूमि उपलब्ध कराने संबंधी निर्देश वापस लेने की मांग की गई थी। अदालत ने राज्य को तीन महीने में भूमि चिह्नित करने और केंद्र के साथ बातचीत से रास्ता निकालने को कहा है। अगली सुनवाई 14 दिसंबर को होगी।

तमिलनाडु की आपत्ति उसकी दो-भाषा नीति और नवोदय विद्यालयों में तीन-भाषा व्यवस्था को लेकर है। राज्य को आशंका है कि इसके जरिए हिंदी को बढ़ावा मिलेगा। भाषा किसी भी समाज की पहचान और स्वाभिमान से जुड़ी होती है, इसलिए इस चिंता को खारिज नहीं किया जा सकता। लेकिन क्या हिंदी के प्रति राजनीतिक असहमति का रास्ता बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय शैक्षणिक अवसर बंद करने से होकर गुजरना चाहिए?

तमिलनाडु आज भी ऐसा राज्य है जहां एक भी नवोदय विद्यालय नहीं है। ऐसे में असली सवाल हिंदी बनाम तमिल नहीं, बच्चों के अवसर बनाम राजनीतिक आग्रह का है। यदि भाषा को लेकर मतभेद है तो पाठ्यक्रम, भाषा-चयन और स्थानीय जरूरतों पर बातचीत हो सकती है। व्यवस्था में बदलाव पर चर्चा हो सकती है। लेकिन स्कूल ही न खोलने का रास्ता क्या समाधान है? भाषा बचाने के लिए राजनीति जरूरी हो सकती है, लेकिन बच्चों का भविष्य राजनीति की कीमत नहीं बनना चाहिए। तमिलनाडु की तमिल अपनी जगह सम्मानित रहे और बच्चों के लिए शिक्षा के दरवाजे खुले रहें-यही वह संतुलन है जिसकी तलाश टकराव नहीं, संवाद से होनी चाहिए।

## जब संपत्ति के आगे छोटी पड़ जाए मां

जिस मां ने उंगली पकड़कर चलना सिखाया, उसी मां को उसके अपने घर में बेगाना बना देना आखिर कैसी संतान का परिचय है? सुप्रीम कोर्ट में सामने आया मां-बेटे का संपत्ति विवाद केवल कानूनी मामला नहीं, बल्कि बदलते पारिवारिक मूल्यों पर गंभीर सवाल है। सुनवाई के दौरान जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा ने बेटे से कहा कि वह अपनी मां के पैर छुए, अपने किए के लिए माफी मांगे और उनका आशीर्वाद ले।

मामले में माता-पिता ने आरोप लगाया कि बेटे और बहू ने उन्हें परेशान किया और संपत्ति पर अधिकार जताने का प्रयास किया। ट्रायल कोर्ट और दिल्ली हाई कोर्ट ने माता-पिता को संपत्ति का मालिक मानते हुए उनके पक्ष में फैसला दिया, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने भी बरकरार रखा। लेकिन इस प्रकरण का सबसे बड़ा संदेश अदालत के फैसले से आगे जाता है। मकान, जमीन और संपत्ति जीवन की जरूरत हो सकते हैं, मगर माता-पिता का सम्मान किसी कागज की कीमत से बड़ा है।

आज बुजुर्ग माता-पिता की सबसे बड़ी पीड़ा आर्थिक अभाव नहीं, बल्कि अपनों की उपेक्षा है। जिस घर के लिए रिश्ते ही तोड़ दिए जाएं, वह मकान तो हो सकता है, घर नहीं।

समाज को तय करना होगा कि विरासत में हमें सिर्फ संपत्ति चाहिए या संस्कार भी।

# सबके अलग-अलग हित

जन जन विचार

...✍ शेखर गुप्ता

ब्रिक्स सम्मेलन में जो तीन ताकतवर नेता (शी, पुतिन, मोदी) इकट्ठे हुए, उनमें अतीत में तालमेल से ज्यादा अंतर्विरोध दिखता रहा है। दुनिया को देखने का उनमें से हर एक का अलग-अलग नजरिया है, और उनके प्रतिद्वंद्वी भी अलग-अलग हैं।

रूस चीन का साथी है, और कुछ हद तक उस पर निर्भर भी है। भारत चीन को अपने अस्तित्वगत प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखता है। और चीन मानता है कि खेल के नियम खुद वह ही तय कर सकता है; और अम्पायर भी वही बन सकता है।

हमें मालूम है कि नाटो क्या है और किसलिए है। इसी तरह आप दूसरे समूहों को गिन सकते हैं। ब्रिक्स को 'शांघाई को-ऑपरेशन ऑर्गेनाइजेशन' (एससीओ) जैसा माना जा सकता है। लेकिन इस पर चीन का प्रभुत्व लगभग स्थापित है। यह चीन का एक बहुपक्षीय संगठन है।

यहां तक कि 57 देशों के बेमानी-से समूह ओआईसी (ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक को-ऑपरेशन) को जोड़ने वाली एक चीज तो है ही, और वह है इस्लाम। इसमें शक नहीं कि इस्लामी मुल्कों पर जो संकट आए, उनके बीच जितने युद्ध हुए, या आज अरब देशों और ईरान के बीच जो लड़ाई चल रही है, उन पर इस समूह को आपने अपना कोई दबदबा जताते नहीं देखा होगा।




सवाल उठाया जा सकता है कि ब्रिक्स के सदस्य देशों के बीच क्या साझापन है? क्या यह ट्रम्प या अमेरिका के खिलाफ संयुक्त मोर्चा है? बिल्कुल नहीं। पुतिन और ट्रम्प तो एक-दूसरे की तारीफ करने वाली जोड़ी हैं। शी भी जल्द ही अमेरिका जाने वाले हैं और दोनों देशों के बीच जो भी खटास है, उसे दूर करने की कोशिश कर सकते हैं।

वे ट्रम्प को अपनी रणनीतिक मुहिम को अपने तक ही सीमित रखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। वे उन्हें सलाह दे सकते हैं कि ताइवान को भूल जाइए। शी के लिए ट्रम्प सबसे बड़ा मौका हैं। वे अमेरिका के गठबंधनों को कमजोर कर रहे हैं।

इन गठबंधनों के कुछ देश अपने लिए खतरों को कम करने के लिए चीन की ओर मुड़ सकते हैं। तब चीन अपने लिए रियायतें बटोरेगा। दूसरे, कमजोर और छोटे देशों ने चीन को नए 'दादा' के रूप में देखना और सलाम करना शुरू कर दिया है।

शी कम-से-कम ट्रम्प की तरह खुलकर बेइज्जत तो नहीं करते। जहां तक रूस की बात है, वह शी की सीमा से सटी महाशक्ति है। दुनिया में सबसे ज्यादा परमाणु हथियार उसके पास ही हैं और पाइप से उपलब्ध एनर्जी के सुरक्षित स्रोत का वह मालिक है।

भारत की सीमाओं पर हमेशा तनाव और सेना की तैनाती रहती है। शी स्थिरता चाहते हैं ताकि व्यापार बढ़े। जैसा कि हमें मालूम है, भारत-चीन व्यापार एकतरफा मामला है। फिलहाल चीन का जो कुल व्यापार सरप्लस है, उसका करीब 10 फीसदी यानी 112 अरब डॉलर के बराबर भारत के हिस्से में है।

अमेरिका के साथ सरप्लस घट रहा है, इसलिए शी विकल्पों की तलाश में हैं। और भारत ने कदम आगे बढ़ा दिया है। चीन के जनसंख्या संबंधी संकट और घरेलू मांग में भारी गिरावट के कारण उसे उन व्यापार सरप्लस की ज्यादा जरूरत है। इसलिए शी ने भारत की सीमा से ध्यान हटा लिया है।

1988 में तंग श्याओपिंग ने बीजिंग में राजीव गांधी से कहा था कि हमारी पीढ़ी में सीमा विवाद को सुलझाने की बुद्धिमानी शायद नहीं है, सो हम इस मसले को भविष्य की ज्यादा बुद्धिमान पीढ़ी के लिए ही छोड़ दें। शी के लिए वह भविष्य शायद अभी नहीं आया है।

वे शायद और समय लेना चाहेंगे, जब तक चीन और भारत के बीच की खाई और चौड़ी हो जाए। इस बीच, पाकिस्तान तो उसके पाले में है ही, जो भारत का संतुलन बिगाड़ता रहेगा। शी की तरह पुतिन भी नाटो के कमजोर पड़ने से खुश हैं।

वे या तो यह उम्मीद कर रहे हैं कि यूक्रेन को लेकर कोई समझौता हो जाएगा और वे अपनी जीत का ऐलान कर देंगे, या तब तक लड़ते रहेंगे जब तक यूक्रेन को अमेरिकी मदद घटती जाएगी और यूरोप करवटें बदलने लगेगा। सार यह है कि न तो शी अमेरिका के खिलाफ दुनिया को एकजुट करने जा रहे हैं और न पुतिन ऐसे किसी दुस्साहस में शामिल होने जा रहे हैं।

शी के विपरीत, पुतिन को भारत से कोई परेशानी नहीं है। लेकिन उनकी पहली ख्वाहिश शी की ख्वाहिश से भिन्न नहीं है, वे भी एकतरफा व्यापार संबंध चाहते हैं। भारत उनसे चीन को छोड़ बाकी सभी देशों के मुकाबले ज्यादा तेल खरीदने तथा इसके लिए उन्हें शुक्रिया कहने को तैयार है।

भारत रूस के हथियारों का सबसे बड़ा मौजूदा और भावी खरीदार बना रहने को तैयार है, खासकर तब जब प्रतिबंध खत्म कर दिए जाएंगे। तेल के बूते भी, भारत के साथ रूस का व्यापार सरप्लस 50 अरब डॉलर के बराबर है।

रूस एक उदार व्यापार साझीदार है और भारत को ऐसी डिफेंस टेक्नोलॉजी साझा करने को तैयार है, जो दूसरा कोई देश नहीं देना चाहेगा। लेकिन, अगर आप सोचते हैं कि पुतिन भारत को बराबरी की हैसियत वाला या रूस भारत को चीन के दर्जे वाला देश मानेगा तो अपना नजरिया बदल लीजिए।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन इन्हीं समीकरणों के साये में हुआ। भारत इसमें सबसे शक्तिशाली पक्ष नहीं था। भारत आज भारी व्यापार घाटे को मंजूर करने को मजबूर है, क्योंकि उसे जिन चीजों की सख्त जरूरत है, उन्हें वह बाहर से खरीद रहा है।

उसका अधिकतर निर्यात थम जाएगा अगर चीन से कल-पुर्जे, सामग्री या थोक में रसायन नहीं आते हैं। चीनी आयातों का सबसे बड़ा पैरोकार भारतीय व्यवसाय व उद्योग जगत ही है। इसके अलावा, भारत को सीमा, 'एलएसी' पर शांति चाहिए।

चीन अमेरिका को दुश्मन नहीं, अपने बराबर मानना चाहता है। न ही अमेरिका भारत का दुश्मन है। एक के बाद एक, तीन भारतीय प्रधानमंत्रियों ने भारत-अमेरिका संबंधों को स्वाभाविक रणनीतिक साझीदारी बताकर उसका स्वागत किया है। और डॉलर के वर्चस्व के खात्मे की बात?

अमेरिकी डॉलर जब सिफर हो जाएगा तब क्या होगा? क्या ब्रिक्स नाम वाली करेंसी उसकी जगह लेगी? ब्रिक्स के 10 सदस्य देशों की कुल जीडीपी का योग 14.33 ट्रिलियन डॉलर है। चीन की अकेले की जीडीपी 20.85 ट्रिलियन डॉलर है।

मूल सदस्यों (भारत, रूस, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका) की जीडीपी चीन के मुकाबले आधी (9.93 ट्रिलियन डॉलर) है। अगर आप अमेरिकी डॉलर का खात्मा चाहते हैं तो क्या आप चीनी मुद्रा युआन के युग में जीने को तैयार हैं?

शक्ति-संतुलनों में भारत कहां पर अपना मुकाम बनाएगा?

चीन अमेरिका को दुश्मन नहीं, अपने बराबर मानना चाहता है। पुतिन को भी भारत से परेशानी नहीं है। लेकिन वे भी एकतरफा व्यापार संबंध ही चाहते हैं। अगर आप सोचते हैं कि पुतिन भारत को चीन के दर्जे वाला देश मानेंगे तो अपना नजरिया बदल लीजिए।




## सरकारी राशि गबन में चिकित्सक गिरफ्तार

**शिवहर।** पुरनहिया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के पूर्व प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. प्रेमकुंज कुमार को सरकारी राशि के गबन और दुरुपयोग के मामले में पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र सिंह के निर्देश पर पुरनहिया थाना पुलिस ने यह कार्रवाई की।

विभागीय जांच और विशेष लेखा परीक्षण में स्वास्थ्य केंद्र के सरकारी कोष में करीब 30 लाख रुपए की वित्तीय अनियमितता सामने आई थी। जांच में फर्जी बिल, ममता प्रोत्साहन राशि में हेराफेरी तथा बिना स्वीकृति राशि निकासी जैसे मामले पाए गए थे। इस संबंध में डॉ. प्रेमकुंज कुमार और तत्कालीन लिपिक राजीव रंजन के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी। दोनों को पहले निलंबित भी किया जा चुका है। पुलिस के अनुसार अनुसंधान के दौरान मिले साक्ष्यों के आधार पर चिकित्सक की गिरफ्तारी की गई है। लिपिक राजीव रंजन की भूमिका की भी जांच जारी है।

## जेल में बंद आरोपी की संदिग्ध मौत

**सासाराम।** शराब मामले में गिरफ्तार तिलौथू के रामडिहरा निवासी अमरजीत कुमार की मंडल कारा सासाराम में बंदी के दौरान संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। घटना से आक्रोशित लोगों ने पोस्ट ऑफिस चौक पर सड़क जाम कर जेल प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि जेल में अमरजीत के साथ प्रताड़ना की गई, जिसके बाद उसकी तबीयत बिगड़ी और उसे सदर अस्पताल के कैदी वार्ड में भर्ती कराया गया, जहां उसकी मौत हो गई। हालांकि इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है।

एडीएम ललित भूषण रंजन और एसडीएम प्रिया रानी के समझाने के बाद लोगों ने जाम हटाया। प्रशासन ने बताया कि परिजनों के आवेदन के आधार पर मामले की जांच की जाएगी और दोषी पाए जाने पर कार्रवाई होगी। मेडिकल टीम से पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। मृतक के परिवार को नियमानुसार सरकारी सहायता उपलब्ध कराने की बात भी कही गई है।

## ललामिवि का खेल एवं सांस्कृतिक कैलेंडर जारी

**दरभंगा।** ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2026-27 के अंतर-महाविद्यालय खेल एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का वार्षिक कैलेंडर कुलपति प्रो. संजय कुमार चौधरी ने जारी किया। विश्वविद्यालय के खेल एवं सांस्कृतिक विभाग ने क्रीड़ा परिषद के सुझावों के आधार पर प्रतियोगिताओं का कार्यक्रम तैयार किया है।

कुलपति ने कहा कि खेल विद्यार्थियों में शारीरिक क्षमता के साथ अनुशासन, नेतृत्व, मानसिक मजबूती और टीम भावना विकसित करते हैं। उन्होंने सभी महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों से प्रतियोगिताओं के लिए समय पर तैयारियां पूरी करने का आग्रह किया।

खेल एवं शारीरिक शिक्षा निदेशक प्रो. अजय नाथ झा ने बताया कि निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रतियोगिताएं समयबद्ध और पारदर्शी ढंग से आयोजित की जाएंगी, ताकि अंतर-महाविद्यालय प्रतियोगिताओं से चयनित खिलाड़ी समय पर अंतर-विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार हो सकें।

# ऑनलाइन पिंडदान पैकेज पर भड़का पंडा समाज

**जन जन विचार**
*...✍ गया*



पितृपक्ष मेला-2026 से पहले बिहार पर्यटन विभाग की ओर से शुरू किए गए ऑनलाइन ई-पिंडदान और विशेष पर्यटन पैकेज को लेकर गयाजी में विवाद गहरा गया है। विष्णुपद मंदिर परिसर में बुधवार को पंडा समाज ने प्रेसवार्ता कर इस व्यवस्था का कड़ा विरोध किया। उनका कहना है कि पिंडदान कोई पर्यटन गतिविधि या ऑनलाइन सेवा नहीं, बल्कि श्रद्धा, धार्मिक परंपरा और मोक्ष से जुड़ा अनुष्ठान है।

पर्यटन विभाग ने 25 सितंबर से 10 अक्टूबर तक होने वाले पितृपक्ष मेले के लिए श्रद्धालुओं की सुविधा के उद्देश्य से एक दिवसीय तथा एक रात-दो दिन के विशेष पैकेज जारी किए हैं। इनमें पिंडदान अनुष्ठान, धार्मिक स्थलों के दर्शन, आवास, भोजन, परिवहन, पूजन सामग्री और पंडा-पुजारी की सेवाएं शामिल हैं। साथ ही ऑनलाइन ई-पिंडदान की सुविधा भी दी गई है।

पंडा समाज ने कहा कि गयाजी को महज पर्यटन स्थल के रूप में पेश करना धार्मिक परंपरा की मूल भावना को कमजोर करता है। उनके अनुसार, गयाजी सदियों से पितरों के तर्पण और मोक्ष से जुड़ी आस्था की नगरी रही है।

ऑनलाइन पिंडदान पर सवाल उठाते हुए पंडा समाज ने कहा कि धार्मिक अनुष्ठान की वास्तविकता, विधि-विधान और संबंधित पंडा परंपरा की जानकारी ऑनलाइन माध्यम से सुनिश्चित करना कठिन है। उनका तर्क है कि पिंडदान कोई ऐसी सेवा नहीं, जिसे केवल शुल्क देकर ऑनलाइन पूरा कराया जा सके।

पंडा समाज ने सरकार से ई-पिंडदान और धार्मिक अनुष्ठानों को पर्यटन पैकेज के रूप में प्रस्तुत करने के फैसले पर पुनर्विचार करने की मांग की है। वहीं, पर्यटन विभाग की पहल का उद्देश्य दूर-दराज और देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा उपलब्ध कराना बताया गया है। अब देखना यह है कि सुविधा और परंपरा के बीच उठे इस विवाद का समाधान किस रास्ते से निकलता है।



*पटना : बिहार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 76वें जन्मदिन के अवसर पर मंदिर में हवन करते भारतीय जनता युवा मोर्चा ( भाजयुमो ) के सदस्य।*

**पृष्ठ 1 का शेषांश...**

## ? कुछ सवाल

### क्या सुरक्षित रहेगी ग्राहक की जेब ?

लेकिन बाजार की अपनी मजबूरियां होती हैं। किसी व्यापारी के लिए अतिरिक्त शुल्क का अर्थ अतिरिक्त लागत है। वह लागत उसके लाभ में समायोजित हो सकती है या कारोबारी खर्च बढ़ा सकती है। कम लाभ पर काम करने वाले व्यापारियों के लिए यह ज्यादा महत्वपूर्ण सवाल है। यही वजह है कि 15 अक्टूबर के बाद असली निगरानी केवल इस बात पर नहीं होगी कि शुल्क कितना है, बल्कि इस बात पर भी होगी कि उसका अप्रत्यक्ष असर ग्राहक की जेब तक पहुंचता है या नहीं।

### क्या फिर लौटेगी नकदी ?

किसका आकलन सही साबित होता है, इसका जवाब 15 अक्टूबर के बाद के आंकड़े देंगे।

क्योंकि यूपीआई केवल भुगतान का माध्यम नहीं रहा। इसने नकदी संभालने की जरूरत घटाई है, छोटे कारोबारियों को डिजिटल पहचान दी है और भुगतान को तेज तथा दर्ज योग्य बनाया है। इसलिए केवल शुल्क लागू होने से लोग बड़े पैमाने पर नकदी की ओर लौटेंगे, यह अभी निश्चित नहीं कहा जा सकता।

### क्यों लगाया शुल्क ?

अब तक शुल्क-मुक्त व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सरकारी सहायता महत्वपूर्ण रही है। नई व्यवस्था का उद्देश्य इस विशाल भुगतान तंत्र के लिए अधिक टिकाऊ आय का रास्ता तैयार करना बताया जा रहा है। शुल्क से मिलने वाली राशि बैंक, भुगतान अनुप्रयोग और अन्य सेवा प्रदाताओं के बीच बांटी जाएगी। यानी सरकार और भुगतान क्षेत्र के सामने चुनौती यह है कि यूपीआई सस्ता भी रहे और उसका पूरा ढांचा आर्थिक रूप से टिकाऊ भी बने।

# बिहार बाढ़ में डूबा सियासत में 'दीया' चमका

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार में बाढ़ का पानी अभी पूरी तरह उतरा भी नहीं है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर आयोजित 'आशीर्वाद का दीया' कार्यक्रम को लेकर सियासी तापमान बढ़ गया है। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने आरोप लगाया कि राज्य में बाढ़ से लाखों लोग प्रभावित हैं, लेकिन सरकार प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर दीये जलाने के लिए 100 करोड़ रुपए खर्च कर रही है।

बिहार सरकार और भाजपा की ओर से 17 सितंबर को प्रधानमंत्री के जन्मदिन के अवसर पर 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत विभिन्न स्थानों पर दीप प्रज्ज्वलन कार्यक्रम आयोजित किए गए। पटना के गंगा पथ समेत कई शहरों में कार्यक्रम हुए।



तेजस्वी यादव ने सवाल उठाया कि जब बाढ़ प्रभावित परिवार भोजन, स्वच्छ पानी और राहत की जरूरत से जूझ रहे हैं, तब सरकारी प्राथमिकता क्या होनी चाहिए। उन्होंने विद्यालयों की बदहाल व्यवस्था का मुद्दा उठाते हुए कहा कि शिक्षकों और सरकारी मशीनरी को ऐसे आयोजनों में लगाने के बजाय शिक्षा और राहत कार्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

बिहार में बाढ़ की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सितंबर के मध्य तक करीब 47.92 लाख लोग प्रभावित बताए गए थे और 15 जिलों के 87 प्रखंडों में बाढ़ का असर था।

सवाल सिर्फ दीये जलाने का नहीं, सरकारी प्राथमिकताओं का है। उत्सव अपनी जगह है और आपदा अपनी जगह; लेकिन जब जनता संकट में हो, तब हर सरकारी खर्च और निर्णय की कसौटी राहत, पुनर्वास और जनहित ही होना चाहिए।

## तेजस्वी के सवाल पर संतोष सुमन का नेहरू वाला जवाब

**पटना।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 76वें जन्मदिन पर बिहार में हुए दीपोत्सव को लेकर सियासी घमासान तेज हो गया है। विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने बाढ़ के बीच 'आशीर्वाद का दीया' कार्यक्रम पर सवाल उठाते हुए दावा किया कि इस आयोजन पर करीब 100 करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब लाखों लोग बाढ़ से प्रभावित हैं, तब सरकारी प्राथमिकता राहत और पुनर्वास होनी चाहिए।

वहीं, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सहयोगी हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा के नेता और बिहार सरकार के मंत्री संतोष कुमार सुमन ने दीपोत्सव का बचाव किया। उनका कहना है कि जन्मदिन पर दीये जलाना भारतीय परंपरा और शुभकामना व्यक्त करने का एक तरीका है और इसे राजनीतिक विवाद का विषय नहीं बनाया जाना चाहिए।

सुमन ने विपक्ष के सवालों के जवाब में पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का उदाहरण देते हुए कहा कि उनकी जयंती 14 नवंबर को लंबे समय से बाल दिवस के रूप में मनाई जाती है। उनके अनुसार, किसी नेता के जन्मदिन या जयंती पर सार्वजनिक आयोजन होना अपने आप में असामान्य नहीं है।




### सेप्टिक टैंक में दम घुटने से दो मजदूरों की मौत

**मुजफ्फरपुर।** बिहार के मुजफ्फरपुर में बंद पड़े निर्माणाधीन सेप्टिक टैंक में दम घुटने से दो मजदूरों की मौत हो गई। घटना सिकंदरपुर थाना क्षेत्र की है। मृतकों की पहचान सोनू कुमार और मोहम्मद जहांगीर के रूप में हुई है।

पुलिस के अनुसार, करीब 15 दिन से बंद सेप्टिक टैंक की ढलाई में इस्तेमाल अस्थायी ढांचे को हटाने के लिए दोनों मजदूर एक-एक कर अंदर गए थे। जहरीली गैस की चपेट में आने से दोनों की मौत हो गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर रस्सी की मदद से शवों को बाहर निकाला।

दोनों को बचाने के लिए अंदर गया तीसरा मजदूर दिनेश कुमार भी गैस की चपेट में आ गया, लेकिन स्थानीय लोगों ने उसे बाहर निकाल लिया। अस्पताल में उसकी हालत खतरे से बाहर बताई गई है। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले में सुरक्षा मानकों के उल्लंघन और मकान मालिक की भूमिका समेत सभी पहलुओं की जांच की जा रही है।

### चलती आम्रपाली एक्सप्रेस में गूंजी किलकारी

**सिवान।** आम्रपाली एक्सप्रेस के जनरल कोच में उस समय खुशी का माहौल बन गया, जब एक गर्भवती महिला ने चलती ट्रेन में बेटे को जन्म दिया। प्रसव पीड़ा शुरू होने पर साथी यात्रियों ने एकजुट होकर महिला के परिजनों की मदद की और ट्रेन में ही प्रसव कराया।

सिवान के सरइया गांव की 29 वर्षीय शाहिस्ता परवीन अपने परिवार के साथ बस्ती से सिवान आ रही थीं। यात्रा के दौरान अचानक उन्हें तेज प्रसव पीड़ा होने लगी। परिजनों और यात्रियों की मदद से ट्रेन में ही सुरक्षित प्रसव कराया गया।

घटना की सूचना रेलवे नियंत्रण कक्ष को दी गई। सिवान जंक्शन पहुंचने पर आरपीएफ के जवानों ने मां और नवजात को ट्रेन से उतारा। रेलवे की चिकित्सकीय टीम ने दोनों की जांच की और उनकी स्थिति सामान्य पाई।

परिजनों के मुताबिक प्रसव की तारीख नजदीक थी, इसलिए शाहिस्ता को घर लाया जा रहा था। इस दौरान यात्रियों के सहयोग ने मुश्किल घड़ी को आसान बना दिया। चलती ट्रेन में गूंजी बच्चे की किलकारी ने यात्रियों के बीच मानवीय संवेदना और सहयोग की मिसाल पेश कर दी।

# मधुबनी की कृषि ने लगाई छलांग, अब लक्ष्य नंबर-1

जन जन विचार
...✍ प्रणय कुमार, मधुबनी

जिस जिले की खेती लंबे समय से जलजमाव और सीमित सिंचाई की दोहरी मार झेलती रही है, वही मधुबनी अब कृषि विकास की राष्ट्रीय दौड़ में तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के तहत पिछले चार महीनों में किए गए प्रयासों ने जिले को राष्ट्रीय स्तर पर सातवें स्थान तक पहुंचा दिया है। अब प्रशासन ने नजर पहले स्थान पर टिकाई है-और इसके लिए खेत से बाजार तक पूरी कृषि व्यवस्था को नए सिरे से गति देने की रणनीति बनाई जा रही है।

12 सितंबर को समाहरणालय सभागार में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के संयुक्त सचिव-सह-मुख्य नोडल पदाधिकारी संजय कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में हुई समीक्षा बैठक में जिले की उपलब्धियों और कमियों का विस्तृत आकलन किया गया। जिला पदाधिकारी आनंद शर्मा ने साफ किया कि सातवें स्थान की उपलब्धि को अंतिम मंजिल नहीं माना जा रहा। अगला लक्ष्य राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान हासिल करना है।

**चुनौती ही बनेगी विकास का आधार**

मधुबनी में जलजमाव और सिंचाई की कमी को बड़ी बाधा माना गया है, लेकिन प्रशासन अब इन्हीं परिस्थितियों में नए अवसर तलाश रहा है। मखाना, मत्स्य पालन, मक्का और फसल विविधीकरण को कृषि विकास के प्रमुख आधार के रूप में आगे बढ़ाया जा रहा है। जिले के 11 चौर क्षेत्रों में 427.5 एकड़ क्षेत्र विकसित किए जाने की जानकारी दी गई। मखाना और मत्स्य उत्पादन की वास्तविक क्षमता जानने के लिए विस्तृत सर्वेक्षण कराने के निर्देश दिए गए हैं।

**जलकुंभी अब समस्या नहीं, संसाधन बनेगी**

जलजमाव वाले क्षेत्रों में फैली जलकुंभी को जैव-खाद में बदलकर 'कचरे से कमाई' की दिशा में पहल की जा रही है। कृषि विज्ञान केंद्र, सुखैत में जलकुंभी से जैव-खाद तैयार करने पर अनुसंधान चल रहा है। बड़े पैमाने पर उपयोग से पहले इसके प्रमाणीकरण और तकनीकी अध्ययन के निर्देश दिए गए हैं।

**प्राकृतिक खेती का दायरा बढ़ा**

जिले में प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों की संख्या 1,875 से बढ़कर 2,375 हो गई है। किसानों को संतुलित उर्वरक उपयोग, प्राकृतिक खेती और उन्नत कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

**23 किसान उत्पादक संगठन, बाजार से जोड़ने की तैयारी**

जिले के 23 किसान उत्पादक संगठनों को अधिक सक्रिय और सक्षम बनाने पर विशेष जोर दिया गया है। किसानों को बाजार की मांग के अनुरूप उत्पादन, गुणवत्तापूर्ण बीज और बेहतर कृषि तकनीक अपनाने के लिए प्रशिक्षण देने की योजना है।

**किसान क्रेडिट कार्ड पर जोर**

अगले दो महीनों में विशेष शिविर लगाकर अधिक से अधिक किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड से जोड़ने का निर्देश दिया गया है। साथ ही रबी 2026 से पहले प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए पंचायतवार किसान सर्वेक्षण कराने की तैयारी है। अरहर उत्पादकों के पंजीकरण, दलहन-तिलहन की खेती, मत्स्य पालकों को किसान क्रेडिट कार्ड से जोड़ने और ड्रोन से उर्वरक छिड़काव जैसी पहलों को भी योजना का हिस्सा बनाया गया है।

**सातवें से पहले स्थान तक की राह**

राष्ट्रीय स्तर पर सातवां स्थान उपलब्धि जरूर है, लेकिन पहले स्थान की असली कसौटी खेत में दिखने वाला बदलाव होगा। सिंचाई, जलजमाव, बाजार, ऋण, तकनीक और उत्पादन—इन सभी मोर्चों पर एक साथ काम करना होगा। मधुबनी ने दौड़ शुरू कर दी है। अब चुनौती यह है कि राष्ट्रीय रैंकिंग की यह चमक किसान की आमदनी और खेत की उत्पादकता में भी दिखाई दे।

# अभिषेक का तूफान, अफगानिस्तान का सफाया

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

## 127 रन से जीत, भारत का 3-0 क्लीन स्वीप



दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में गुरुवार की रात भारतीय क्रिकेट के लिए रिकॉर्ड और रोमांच से भरी रही। भारत ने तीसरे और अंतिम टी20 मुकाबले में अफगानिस्तान को 127 रन से करारी शिकस्त देकर तीन मैचों की सीरीज में 3-0 से क्लीन स्वीप कर लिया। भारत की जीत की पटकथा पहले बल्लेबाजों ने लिखी और फिर गेंदबाजों ने अफगानिस्तान की पारी को समेटकर उस पर मुहर लगा दी।

भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में सात विकेट पर 221 रन बनाए। जवाब में अफगानिस्तान की पूरी टीम 14.1 ओवर में महज 94 रन पर सिमट गई। रनों के अंतर से यह अफगानिस्तान की टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में अब तक की सबसे बड़ी हार रही।

**अभिषेक शर्मा ने बरपाया तूफान**

मैच की सबसे बड़ी कहानी अभिषेक शर्मा की विस्फोटक बल्लेबाजी रही। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने शुरुआत से ही अफगान गेंदबाजों पर हमला बोल दिया। अभिषेक ने महज 16 गेंदों में अर्धशतक पूरा किया और इसके बाद 30 गेंदों में शतक जड़ दिया। उनका शतक टी20 अंतर्राष्ट्रीय में भारत की ओर से सबसे तेज शतक रहा। उन्होंने इस मामले में रोहित शर्मा का पिछला भारतीय रिकॉर्ड पीछे छोड़ा। रोहित ने 2017 में श्रीलंका के खिलाफ 35 गेंदों में शतक लगाया था।

अभिषेक की पारी ने भारत को पावरप्ले में ही 100 रन के पार पहुंचा दिया। यह टी20 अंतर्राष्ट्रीय में भारत का पावरप्ले का अब तक का सर्वोच्च स्कोर रहा। उनकी आक्रामक बल्लेबाजी ने शुरुआती छह ओवरों में ही मुकाबले का रुख भारत की ओर मोड़ दिया।

**सैमसन ने भी दिखाई ताकत**

अभिषेक के साथ संजू सैमसन ने भी शानदार बल्लेबाजी की। दोनों ने शुरुआती ओवरों में अफगानिस्तान के गेंदबाजों को दबाव में ला दिया। सैमसन ने 35 गेंदों में 50 रन बनाए और सीरीज में लगातार दूसरी बार पचास से अधिक का स्कोर किया।

भारत की पारी में कप्तान श्रेयस अय्यर ने 29, शिवम दुबे ने 14 और ईशान किशन ने 10 रन का योगदान दिया। तिलक वर्मा दो और नीतीश रेड्डी एक रन बनाकर आउट हुए, जबकि अक्षर पटेल पांच रन पर नाबाद रहे।

**94 रन पर ढेर हुआ अफगानिस्तान**

222 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी अफगानिस्तान की शुरुआत बेहद खराब रही। भारतीय गेंदबाजों ने नियमित अंतराल पर विकेट लेकर विपक्षी बल्लेबाजों को संभलने का मौका नहीं दिया।

कप्तान इब्राहिम जादरान ने 25 रन बनाकर कुछ प्रतिरोध किया। अजमातुल्लाह ओमरजई ने 17, रहमानुल्लाह गुरबाज ने 15 और नूर उल रहमान ने 11 रन बनाए। इनके अलावा कोई बल्लेबाज बड़ी पारी नहीं खेल सका।

भारत की ओर से नीतीश कुमार रेड्डी और रवि बिश्नोई ने तीन-तीन विकेट झटके। अक्षर पटेल ने दो विकेट लिए, जबकि जसप्रीत बुमराह और यश ठाकुर को एक-एक सफलता मिली। अफगानिस्तान की पारी 14.1 ओवर में 94 रन पर खत्म हो गई।

**अफगानिस्तान की सबसे बड़ी टी20 हार**

127 रन की हार ने अफगानिस्तान के लिए एक अनचाहा रिकॉर्ड भी बना दिया। इससे पहले टी20 अंतर्राष्ट्रीय में उसकी सबसे बड़ी हार 116 रन की थी, जो 2012 में इंग्लैंड के खिलाफ मिली थी। 2024 में वेस्टइंडीज ने अफगानिस्तान को 104 रन से हराया था। भारत के खिलाफ भी अफगानिस्तान का यह सबसे कम टी20 स्कोर रहा। इससे पहले भारत के खिलाफ उसका न्यूनतम स्कोर 2022 में आठ विकेट पर 111 रन था।

**भारत ने बनाया एक और बड़ा रिकॉर्ड**

इस जीत के साथ भारत ने टी20 अंतर्राष्ट्रीय में 100 या उससे अधिक रन के अंतर से जीत की संख्या 10 कर ली। इस आंकड़े के साथ भारत इस तरह की जीत के मामले में कनाडा के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर पहुंच गया। एक ही मुकाबले में भारत के लिए बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों विभागों में रिकॉर्ड बने। अभिषेक की तेजतर्रार बल्लेबाजी ने स्कोरबोर्ड को रफ्तार दी तो रेड्डी, बिश्नोई और अक्षर ने गेंद से अफगानिस्तान को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया।

**3-0 से सीरीज पर कब्जा**

तीसरे टी20 में जीत के साथ भारत ने अफगानिस्तान के खिलाफ पूरी सीरीज पर 3-0 से कब्जा कर लिया। खास बात यह रही कि भारत ने अंतिम मुकाबले में पहले बल्लेबाजी का मौका मिलने का पूरा फायदा उठाया।

अभिषेक शर्मा की रिकॉर्डतोड़ पारी, सैमसन का अर्धशतक और भारतीय गेंदबाजों की सटीक गेंदबाजी ने दिल्ली के मुकाबले को एकतरफा बना दिया। अफगानिस्तान के लिए यह मैच जहां रिकॉर्ड की दृष्टि से बेहद निराशाजनक रहा, वहीं भारत के लिए यह मुकाबला कई व्यक्तिगत और टीम रिकॉर्ड के साथ यादगार जीत बन गया।

## वेस्टइंडीज भी जाएंगे वैभव सूर्यवंशी

**नई दिल्ली।** वेस्टइंडीज के खिलाफ अक्टूबर में होने वाली पांच मैचों की टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम का ऐलान कर दिया गया है। चयनकर्ताओं ने नियमित टीम पर भरोसा जताते हुए बड़े बदलाव नहीं किए हैं। हालांकि, अनुभवी ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या को टी20 टीम में भी जगह नहीं मिली है। वहीं, युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी टीम में जगह बनाने में सफल रहे हैं।

श्रेयस अय्यर कप्तान, जबकि तिलक वर्मा उपकप्तान होंगे। टीम में अभिषेक शर्मा, वैभव सूर्यवंशी, संजू सैमसन और ईशान किशन को शामिल किया गया है। जसप्रीत बुमराह को कार्यभार प्रबंधन के तहत आराम दिया गया है।

भारत और वेस्टइंडीज के बीच पहला टी20 मुकाबला 6 अक्टूबर को लखनऊ में होगा। इसके बाद 9 अक्टूबर को रांची, 11 अक्टूबर को इंदौर, 14 अक्टूबर को हैदराबाद और 16 अक्टूबर को बंगलूरू में मुकाबले खेले जाएंगे।

हार्दिक पांड्या चोट से उबर रहे हैं और उन्होंने अभ्यास शुरू कर दिया है, लेकिन चयन नहीं होने से उनके पूरी तरह मैच फिट होने को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। उधर, ऋषभ पंत को वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे टीम में जगह नहीं मिली है। हालांकि, वह रणजी चैंपियन जम्मू-कश्मीर के खिलाफ होने वाले ईरानी कप में शेष भारत टीम की कप्तानी करेंगे। आकाश दीप को भी टीम में शामिल किया गया है, लेकिन उनका खेलना फिटनेस पर निर्भर करेगा।

एशियाई खेलों के लिए भी भारतीय टीम में बदलाव किया गया है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

## 300 करोड़ पार! 'हनुमान अंश'...

**छह सप्ताह बाद भी कमाई की रफ्तार**

'हनुमान अंश' की कहानी केवल 300 करोड़ तक पहुंचने की नहीं है। इसकी खासियत यह है कि सिनेमाघरों में छह सप्ताह से अधिक समय गुजरने के बाद भी फिल्म दर्शकों को खींच रही है। उपलब्ध कारोबार आंकड़ों के अनुसार, एक दिन में फिल्म ने करीब 9 करोड़ रुपए का वैश्विक कारोबार किया।

फिल्म की पहुंच भारत से बाहर भी बनी हुई है। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सहित विभिन्न विदेशी बाजारों से फिल्म ने करीब 20.25 करोड़ रुपए जुटाए हैं। इससे संकेत मिलता है कि आध्यात्मिक विषय पर बनी फिल्म को भारतीय दर्शकों के अलावा विदेशों में रहने वाले दर्शकों से भी प्रतिक्रिया मिली है।

**बड़ी फिल्मों के बीच अलग पहचान**

300 करोड़ के आंकड़े ने 'हनुमान अंश' को 2026 की कई चर्चित फिल्मों से आगे पहुंचा दिया है। उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक, फिल्म ने 'मिर्जापुर द मूवी' के 286 करोड़, 'भूत बंगला' के 287.89 करोड़, 'धमाल 4' के 230.61 करोड़ और 'आवारापन 2' के 213.6 करोड़ रुपए के बताए गए वैश्विक कारोबार को पीछे छोड़ा है।

इसके अलावा 'वेलकम टू द जंगल', 'कॉकटेल 2', 'राजा शिवाजी', 'ओ रोमियो', 'है जवानी तो इश्क होना है', 'पति पत्नी और वो', 'चांद मेरा दिल', 'द केरल स्टोरी 2' और 'मर्दानी 3' जैसी फिल्मों के बताए गए कारोबार आंकड़े भी इससे नीचे हैं।

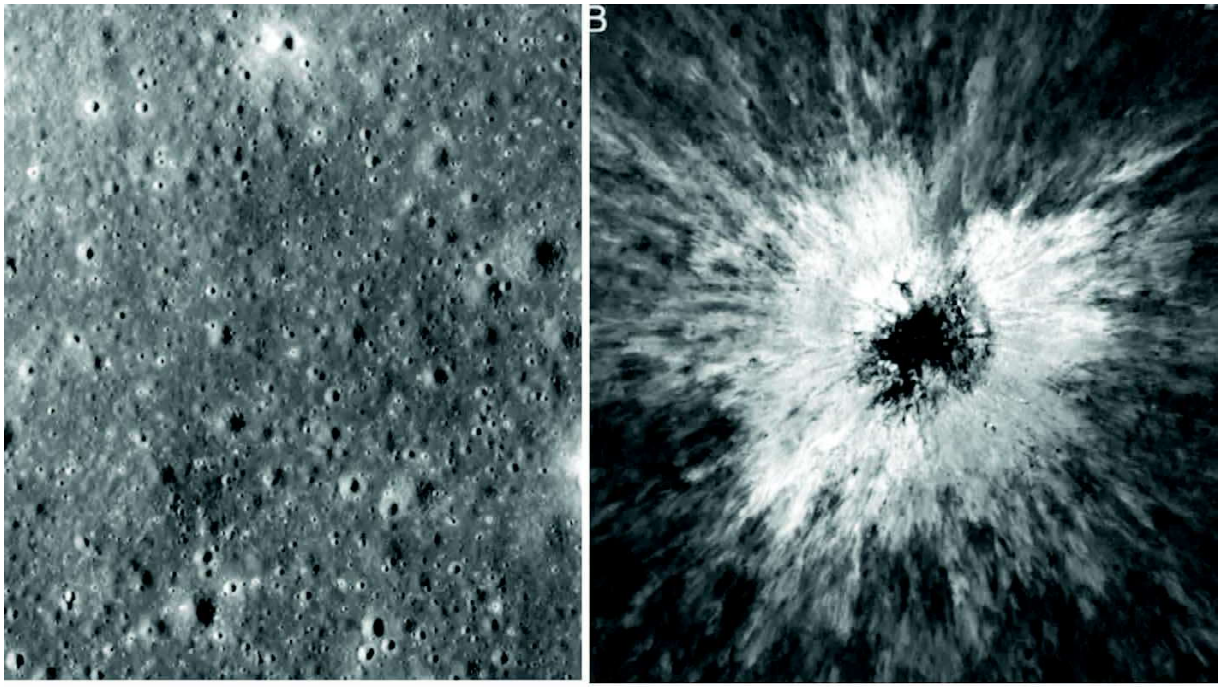
यहां सबसे दिलचस्प बात बजट और कारोबार का अंतर है। बड़े सितारों और बड़े बजट वाली फिल्मों के बीच करीब 2 करोड़ रुपए की लागत से बनी फिल्म का 300 करोड़ के पार पहुंचना अपने आप में इसकी बॉक्स ऑफिस यात्रा को खास बनाता है।

**अब दक्षिण भारत पर नजर**

निर्माताओं ने फिल्म की सफलता को अगले बाजार तक ले जाने की तैयारी कर ली है। 18 सितंबर को इसका तेलुगु संस्करण रिलीज होने जा रहा है। दक्षिण भारतीय दर्शकों तक पहुंच बनने के बाद फिल्म के कारोबार में और इजाफे की संभावनाओं पर नजर रहेगी।

'हनुमान अंश' का सफर यह भी दिखाता है कि बॉक्स ऑफिस पर हर बड़ी कहानी बड़े बजट से शुरू नहीं होती। कभी-कभी सीमित संसाधनों से बनी फिल्म भी दर्शकों की पसंद बनकर लंबी दौड़ लगा सकती है। 2 करोड़ से शुरू हुई यह यात्रा 300 करोड़ पार कर चुकी है-और अब कहानी का अगला अध्याय तेलुगु बाजार में लिखा जाना बाकी है।

# चांद पर सदी की टक्कर! 728 फीट का 'जख्म' बना वैज्ञानिकों के लिए नई प्रयोगशाला



## 2024 में हुई एक भीषण अंतरिक्षीय टक्कर का मिला ताजा निशान 43 मीटर गहरा क्रेटर खोलेगा चंद्रमा के भविष्य के कई राज

**जन जन विचार**
*...✍ नई दिल्ली*

चंद्रमा को हम सदियों से शांत, स्थिर और रहस्यमयी दुनिया के रूप में देखते आए हैं। लेकिन उसकी सतह पर पड़ा एक ताजा 'जख्म' बता रहा है कि अंतरिक्ष की यह दुनिया उतनी शांत नहीं, जितनी धरती से दिखाई देती है। नासा के वैज्ञानिकों ने चंद्रमा पर एक नया और विशाल क्रेटर खोजा है, जो संभवत: किसी क्षुद्रग्रह या धूमकेतु की जोरदार टक्कर से बना है।

इस क्रेटर का नाम 'मैकगेचिन' रखा गया है। इसका व्यास करीब 728 फीट (222 मीटर) और गहराई लगभग 141 फीट (43 मीटर) है। यानी चंद्रमा की सतह पर कुछ ही क्षणों में करीब छह-सात मंजिला इमारत की ऊंचाई जितना गहरा निशान बन गया। वैज्ञानिकों के अनुसार इतनी बड़ी टक्कर चंद्रमा पर लगभग सदी में एक बार या उससे भी कम देखने को मिल सकती है।

**पुरानी तस्वीरों में नहीं था यह गड्ढा**

मैकगेचिन की सबसे बड़ी खासियत उसका आकार नहीं, बल्कि उसकी 'उम्र' है। नासा के लूनर रिकॉनिसेंस ऑर्बिटर (एलआरओ) ने इसे हाल में पहचाना। एलआरओ वर्ष 2009 से चंद्रमा की सतह पर नजर रख रहा है और उसकी तस्वीरों ने वैज्ञानिकों को इस क्रेटर के बनने से पहले और बाद की स्थिति की तुलना करने का मौका दिया।

यह खोज एक नियमित डेटा-जांच के दौरान हुई। वैज्ञानिक रॉबर्ट वैगनर की नजर चंद्रमा की तस्वीरों में एक असामान्य रूप से चमकीले धब्बे पर पड़ी। उसके चारों ओर गहरा घेरा दिखाई दे रहा था। जब पुरानी तस्वीरों से मिलान किया गया तो सामने आया कि वहां पहले ऐसा कोई निशान था ही नहीं।

यहीं से शुरू हुई उस अंतरिक्षीय टक्कर की कहानी, जिसने चंद्रमा की सतह को हमेशा के लिए बदल दिया।

**आखिर कब हुआ था विस्फोट जैसा प्रभाव ?**

शोधकर्ताओं के अनुमान के मुताबिक यह टक्कर 11 अप्रैल और 22 मई 2024 के बीच किसी समय हुई। यानी जिस घटना का निशान अब वैज्ञानिकों को मिला है, वह ब्रह्मांडीय समय-मान पर बेहद हाल की घटना है। संभावना है कि तीन से छह मंजिला इमारत के आकार का कोई अंतरिक्षीय पिंड चंद्रमा से टकराया हो। टक्कर की ऊर्जा ने सतह को उछाल दिया और आसपास के क्षेत्र में मलबा फैला दिया। परिणामस्वरूप सैकड़ों फीट चौड़ा और 43 मीटर गहरा क्रेटर तैयार हो गया। चंद्रमा पर ऐसे लाखों छोटे-बड़े क्रेटर मौजूद हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश इतने पुराने हैं कि उनके बनने की वास्तविक प्रक्रिया को वैज्ञानिक प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते। मैकगेचिन इस लिहाज से एक दुर्लभ अवसर है।

**चांद पर हवा नहीं, इसलिए खतरा सीधा**

धरती पर अंतरिक्ष से आने वाले कई छोटे पिंड वायुमंडल में प्रवेश करते ही घर्षण के कारण जल जाते हैं या उनकी गति कम हो जाती है। चंद्रमा के पास ऐसा सुरक्षा कवच नहीं है।

वहां वायुमंडल लगभग न के बराबर है। इसलिए अंतरिक्ष से आने वाला मलबा या कोई छोटा क्षुद्रग्रह सतह तक सीधे पहुंच सकता है। टक्कर होने पर चंद्रमा की मिट्टी और चट्टानों का मलबा भी आसपास के इलाके में फैल सकता है।

यही कारण है कि मैकगेचिन केवल एक नया गड्ढा नहीं है। यह वैज्ञानिकों के लिए चंद्रमा पर भविष्य में काम करने वाले इंसानों और मशीनों के सामने आने वाले प्राकृतिक खतरों को समझने का एक मौका भी है।

**क्या बदल सकता है भविष्य के मून मिशनों का रुख ?**

अमेरिका और चीन समेत कई देश आने वाले वर्षों में चंद्रमा पर मानव मिशनों और स्थायी गतिविधियों की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे में वैज्ञानिकों के लिए यह जानना जरूरी है कि चंद्रमा की सतह कितनी गतिशील है और अंतरिक्षीय टक्करों का असर कितना व्यापक हो सकता है।

मैकगेचिन के अध्ययन से वैज्ञानिक यह समझने की कोशिश कर सकते हैं कि टक्कर के समय कितनी सामग्री बाहर निकली, मलबा कितनी दूरी तक पहुंचा और चंद्र सतह की संरचना किस तरह बदली। यानी यह 728 फीट का गड्ढा सिर्फ चंद्रमा की सतह पर बना एक निशान नहीं है। यह भविष्य के चंद्र अभियानों के लिए एक चेतावनी, वैज्ञानिकों के लिए प्राकृतिक प्रयोगशाला और इंसान की चंद्रमा पर बढ़ती मौजूदगी के लिए एक नया सवाल है-क्या हम जिस चांद पर पहुंचने की तैयारी कर रहे हैं, उसे अभी पूरी तरह समझ पाए हैं ?



ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ

সাপ্তাহিক

# জন জন বিচাৰ

Guwahati, 18 September, 2026 Friday :: শুক্রবাৰ, ভাদ, শুক্ল পক্ষ, সপ্তমী, শকাব্দ ১৯৪৮



# বানত থমকিল জনগণনা, চাৰাইদেউ শিৱসাগৰত গৃহ তালিকাভুক্তিৰ সময় বৃদ্ধি

জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী



## বানপানীৰ পৰিস্থিতিৰ প্ৰভাৱত ৩১ অক্টোবৰলৈ বৃদ্ধি হাউচ লিষ্টিং; আগষ্টত বন্ধ হৈছিল প্ৰশিক্ষণ আৰু প্ৰস্তুতি

অসমৰ বানপানীপ্ৰভাৱিত চাৰাইদেউ আৰু শিৱসাগৰ জিলাত জনগণনা ২০২৭ৰ গৃহ তালিকাভুক্তি আৰু গৃহ গণনা কাৰ্যসূচীৰ সময়সীমা প্ৰায় এমাহ বৃদ্ধি কৰা হৈছে। ভাৰতৰ মহাপঞ্জীয়ক তথা জনগণনা আয়ুক্ত মৃত্যুঞ্জয় কুমাৰ নাৰায়ণে জাৰি কৰা অধিসূচনাৰ জৰিয়তে দুয়োখন জিলাত এই কাম ৩১ অক্টোবৰ, ২০২৬লৈ অব্যাহত ৰখাৰ সিদ্ধান্ত লোৱা হৈছে। পূৰ্বতে এই কাৰ্যসূচী ৩০ ছেপ্টেম্বৰত শেষ হোৱাৰ কথা আছিল।

**বানপানীৰ বাবেই সময় বৃদ্ধি**

চাৰাইদেউ আৰু শিৱসাগৰত চলিত বানপানীৰ পৰিস্থিতিৰ প্ৰতি লক্ষ্য ৰাখিয়েই এই সিদ্ধান্ত লোৱা হৈছে। বানৰ বাবে আগষ্ট মাহত দুয়োখন জিলাতে জনগণনা সম্পৰ্কীয় প্ৰশিক্ষণ আৰু আন প্ৰস্তুতিমূলক কাম সাময়িকভাৱে বন্ধ ৰাখিবলগীয়া হৈছিল। ফলত নিৰ্ধাৰিত সময়ৰ ভিতৰত গৃহ তালিকাভুক্তিৰ কাম সম্পূৰ্ণ কৰাত অসুবিধাৰ সৃষ্টি হয়।

অধিসূচনাত স্পষ্টকৈ কোৱা হৈছে যে অসমৰ চাৰাইদেউ আৰু শিৱসাগৰ জিলাৰ ক্ষেত্ৰত ভাৰত জনগণনা ২০২৭ৰ গৃহ তালিকাভুক্তি কাৰ্যসূচীৰ সময়সীমা ৩১ অক্টোবৰলৈ বৃদ্ধি কৰা হল।

**অসমত প্ৰথম পৰ্যায়ৰ কাম সম্পন্ন**

জনগণনা ২০২৭ৰ প্ৰথম পৰ্যায়ৰ অংশ হিচাপে অসমৰ অধিকাংশ অঞ্চলত গৃহ তালিকাভুক্তিৰ কাম ১৭ আগষ্টৰ পৰা ১৫ ছেপ্টেম্বৰলৈ চলিছিল। এই পৰ্যায়ত দেশজুৰি ঘৰ, গৃহস্থলী আৰু বিভিন্ন গাঁথনিৰ তথ্য সংগ্ৰহ কৰি পৰৱৰ্তী জনসংখ্যা গণনাৰ বাবে এটা বিস্তৃত আধাৰ প্ৰস্তুত কৰা হয়।

অৱশ্যে বানপানীৰ ফলত চাৰাইদেউ আৰু শিৱসাগৰৰ ক্ষেত্ৰত সাধাৰণ সময়সূচীৰ পৰা ব্যতিক্ৰম কৰা হৈছে। ইয়াৰ ফলত এই দুয়োখন জিলাৰ সংশ্লিষ্ট পৰিয়াল আৰু গণনাকৰ্মীসকলে এতিয়া ৩১ অক্টোবৰলৈ গৃহ তালিকাভুক্তিৰ কাম সম্পূৰ্ণ কৰাৰ সুযোগ লাভ কৰিব।

**জনগণনা ২০২৭ দুটা পৰ্যায়ত**

ভাৰতৰ দশবাৰ্ষিক জনগণনা এইবাৰ দুটা পৰ্যায়ত সম্পন্ন কৰা হৈছে। প্ৰথম পৰ্যায়ত গৃহ তালিকাভুক্তি আৰু গৃহ গণনা, আৰু দ্বিতীয় পৰ্যায়ত জনসংখ্যা গণনা কৰা হব। গৃহ তালিকাভুক্তিৰ পৰ্যায় ২০২৬ চনৰ এপ্ৰিলৰ পৰা ছেপ্টেম্বৰলৈ বিভিন্ন ৰাজ্য আৰু কেন্দ্ৰীয় শাসিত অঞ্চলৰ নিৰ্ধাৰিত সময়সূচী অনুসৰি অনুষ্ঠিত হৈছে। জনসংখ্যা গণনাৰ মূল পৰ্যায় ২০২৭ চনৰ ফেব্ৰুৱাৰী মাহত অনুষ্ঠিত হোৱাৰ কথা।

গৃহ তালিকাভুক্তিৰ সময়ত কেবল মানুহৰ সংখ্যা সংগ্ৰহ কৰা নহয়; প্ৰতিটো ঘৰ, গৃহস্থলী আৰু বাসস্থানৰ বিষয়ে প্ৰাথমিক তথ্য সংগ্ৰহ কৰি পৰৱৰ্তী পৰ্যায়ৰ জনগণনাৰ বাবে তথ্যভিত্তি গঢ়ি তোলা হয়।

**২০২১ৰ জনগণনা মহামাৰীৰ বাবে পিছুৱাইছিল**

দশবাৰ্ষিক জনগণনা মূলতঃ ২০২১ চনত অনুষ্ঠিত হোৱাৰ কথা আছিল। কিন্তু কোভিড-১৯ মহামাৰীৰ পৰিস্থিতিৰ বাবে সেই জনগণনা পিছুৱাই দিয়া হয়। তাৰ পিছত ২০২৭১ জনগণনা প্ৰক্ৰিয়া আগবঢ়োৱা হৈছে।

জনগণনা কাৰ্যসূচীত স্ব-গণনাৰ সুবিধাও ৰখা হৈছে। নিৰ্দিষ্ট অঞ্চলত ঘৰে ঘৰে গৃহ তালিকাভুক্তিৰ ৩০ দিনীয়া পৰ্যায় আৰম্ভ হোৱাৰ ঠিক আগতে ৰপ্ত দিনৰ সময়ছোৱাত স্ব-গণনাৰ সুযোগ দিয়াৰ ব্যৱস্থা আছে।

**বানপানীৰ ক্ষতিগ্ৰস্ত অঞ্চলত বিশেষ গুৰুত্ব**

চাৰাইদেউ আৰু শিৱসাগৰ এইবাৰৰ বানপানীৰ অন্যতম অধিক ক্ষতিগ্ৰস্ত অঞ্চল আছিল। আগষ্টৰ চৰকাৰী তথ্য অনুসৰি শিৱসাগৰত বানৰ ফলত ৫৩জন আৰু চাৰাইদেউত ২২জন লোকৰ মৃত্যু হৈছিল বুলি প্ৰতিবেদন প্ৰকাশ পাইছিল। দুয়োখন জিলাতে বৃহৎ সংখ্যক লোক, কৃষিভূমি আৰু ঘৰ-দুৱাৰ ক্ষতিগ্ৰস্ত হৈছিল।

বানপানীৰ পিছত ক্ষয়ক্ষতিৰ মূল্যায়ন আৰু পুনৰ্বাসনৰ কামো চলি আছে। ১৫ ছেপ্টেম্বৰত অসম চৰকাৰে শিৱসাগৰ, চাৰাইদেউ, যোৰহাট আৰু গোলাঘাটত বানৰ ক্ষয়ক্ষতিৰ দ্বিতীয় পৰ্যায়ৰ সমীক্ষা ১০ অক্টোবৰৰ ভিতৰত সম্পূৰ্ণ কৰাৰ লক্ষ্য নিৰ্ধাৰণ কৰিছিল।

এনে পৰিস্থিতিত জনগণনাৰ গৃহ তালিকাভুক্তিৰ সময় বৃদ্ধি কৰাটো বানপীড়িত অঞ্চলসমূহত অসম্পূৰ্ণ তথ্য সংগ্ৰহৰ সমস্যা হ্ৰাস কৰাৰ বাবে গুৰুত্বপূৰ্ণ পদক্ষেপ হিচাপে বিবেচিত হৈছে।

# কাজিৰঙাৰ ষষ্ঠ সংযোজনৰ কাষত পোৱালি ঢেঁকীয়াপতীয়া বাঘ উদ্ধাৰ

জন জন বিচাৰ
...বিস্বনাথ

বিস্বনাথ জিলাৰ বিহালীৰ সমীপৱৰ্তী নটুনগাঁৱত বৃহস্পতিবাৰে এটা পোৱালি ঢেঁকীয়াপতীয়া বাঘ সুৰক্ষিতভাৱে উদ্ধাৰ কৰা হয়। গাঁওখন কাজিৰঙা ৰাষ্ট্ৰীয় উদ্যান আৰু ব্যাঘ্ৰ সংৰক্ষণ ক্ষেত্ৰৰ ষষ্ঠ সংযোজনৰ কাষতে অৱস্থিত আৰু অঞ্চলটো বিস্বনাথ বন্যপ্ৰাণী সংমণ্ডলৰ অধীনত।

পুৱাৰ ভাগত জনবসতিৰ মাজত জোপোহাৰ ভিতৰত বাঘটোৰ পোৱালিটোক প্ৰত্যক্ষ কৰাৰ পিছতে স্থানীয় লোকসকলে বন বিভাগক খবৰ দিয়ে। খবৰ লাভ কৰাৰ পাছত বন বিভাগে অসামৰিক প্ৰশাসন আৰু আৰক্ষীৰ সহযোগত অঞ্চলটো ঘেৰি ধৰে। ইয়াৰ উদ্দেশ্য আছিল একে সময়তে গাঁওবাসী আৰু বন্যপ্ৰাণীটোৰ সুৰক্ষা নিশ্চিত কৰা।

বন বিভাগৰ কৰ্মীসকলে প্ৰথমে পোৱালিটোক নিৰীক্ষণত ৰাখে। পোৱালিটো মাতৃৰ পৰা বিচ্ছিন্ন হৈ গাঁওখনলৈ আহি পৰা বুলি সন্দেহ কৰি কেইবাঘণ্টা ধৰি মাতৃ বাঘজনী ঘুৰি অহাৰ অপেক্ষা কৰা হয়। কিন্তু দীৰ্ঘ সময় নিৰীক্ষণ কৰাৰ পাছতো আন কোনো বাঘৰ উপস্থিতিৰ চিন পোৱা নগ'ল।

পিছত মাতৃৰ সৈতে স্বাভাৱিকভাৱে মিলনৰ সম্ভাৱনা কমি অহাতবন বিভাগে পৰিকল্পিতভাৱে উদ্ধাৰ অভিযান চলায়। পোৱালিটোক লাহে লাহে খাঁচাৰ দিশে আগবঢ়াই নিবলৈ জাল স্থাপন কৰা হয়। দীৰ্ঘ সময় অপেক্ষাৰ অন্তত



পোৱালিটো খাঁচাত প্ৰৱেশ কৰাত তাক সুৰক্ষিতভাৱে উদ্ধাৰ কৰা হয়।

বয়স কম হোৱাৰ বাবে পোৱালিটোক উদ্ধাৰৰ সময়ত কোনো ধৰণৰ ঔষধ প্ৰয়োগ কৰি অচেতন কৰা হোৱা নাছিল। বৰ্তমান বন বিভাগৰ তত্বাধানত পোৱালিটোক ৰখা হৈছে আৰু প্ৰয়োজনীয় পশু চিকিৎসা প্ৰদান কৰা হৈছে।

বন বিভাগে জনোৱা মতে, পোৱালিটোৰ স্বাস্থ্য আৰু আচৰণৰ অৱস্থা পৰীক্ষা কৰি সম্ভৱ হ'লে ষষ্ঠ সংযোজন অঞ্চলত ইয়াক মাতৃ বাঘজনীৰ সৈতে পুনৰ মিলিত কৰাৰ চেষ্টা চলোৱা হ'ব। পোৱালিটোক পুনৰ প্ৰাকৃতিক বাসস্থানলৈ ঘুৰাই দিয়াইকন বিভাগৰ মূল লক্ষ্য।

উদ্ধাৰ অভিযানৰ সময়ত ধৈর্য আৰু সহযোগিতা আগবঢ়োৱাৰ বাবে বন বিভাগে অঞ্চলটোৰ বাসিন্দাসকলক ধন্যবাদ জনায়। ঘটনাটোৱে কাজিৰঙাৰ ষষ্ঠ সংযোজনৰ গুৰুত্বও পুনৰ উজাগৰ কৰিছে, কিয়নো এই অঞ্চলটোৱে বন্যপ্ৰাণীৰ বাবে সংৰক্ষিত বাসস্থান সম্প্ৰসাৰণৰ লগতে বন্যপ্ৰাণীৰ স্বাভাৱিক চলাচলৰ পথ হিচাপেও গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা পালন কৰে।

## গড়গাঁও মহাবিদ্যালয় ৩৩ সংখ্যক তনু কোঁৱৰ সোঁৱৰণী তর্ক প্রতিযোগিতা

# দিব্যজ্যোতি নাথ শ্রেষ্ঠ তার্কিক, গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয় শ্রেষ্ঠ দল

জন জন বিচাৰ
...ৰ নয়নমণি ফুকন, নাজিৰা

অসমৰ এখন মর্যাদাপূর্ণ আৰু প্রতিষ্ঠিত তর্কপ্রতিযোগিতা ৰূপে গণ্য হোৱা তনু কোঁৱৰ সোঁৱৰণী সদৌ অসম আন্তঃমহাবিদ্যালয় আৰু বিশ্ববিদ্যালয় তর্কপ্রতিযোগিতাখন শিৱসাগৰ জিলাৰ ঐতিহ্যমণ্ডিত গড়গাঁও মহাবিদ্যালয় (স্বায়ত্ত শাসিত)ত অনুষ্ঠিত হৈ যায়। মহাবিদ্যালয়খনৰ প্রথমগৰাকী স্থায়ী অধ্যক্ষ তনু কোঁৱৰৰ স্মৃতিত ৩৩ সংখ্যক বাৰৰ বাবে অনুষ্ঠিত এইবাৰৰ প্রতিযোগিতাখনত অসমৰ বিভিন্ন প্রান্তৰ মহাবিদ্যালয়-বিশ্ববিদ্যালয়ৰ ২০ টি দলৰ ৩৮ গৰাকী প্রতিযোগীয়ে অংশগ্রহণ কৰে। **'সাম্প্রতিক প্রেক্ষাপটত উচ্চ শিক্ষা ব্যৱস্থাত প্রচলিত পাঠ্যক্রমৰ বিপৰীতে দক্ষতাভিত্তিক পাঠ্যক্রমেহে শিক্ষার্থীৰ ভৱিষ্যত সুৰক্ষিত কৰিব'**- শীর্ষক এটি গুৰুত্বপূর্ণ বিষয়ত অনুষ্ঠিত এইবাৰৰ তর্ক প্রতিযোগিতাখন উদ্বোধন কৰে মহাবিদ্যালয়খনৰ পৰিচালনা সমিতিৰ সভাপতি বিমান চন্দ্র বৰুৱাই। প্রতিযোগিতাখনৰ আদৰণী ভাষণ আগবঢ়াই মহাবিদ্যালয়খনৰ অধ্যক্ষ তথা বিশিষ্ট শিক্ষাবিদ, কবি, নিবন্ধকাৰ ডক্টৰ সব্যসাচী মহন্তই। আদৰণী ভাষণত তেওঁ




এই প্রতিযোগিতাখনলৈ সকলোকে আদৰণি জনাই সদনত উপস্থাপিত বিষয়টোৰে নতুন চিন্তাৰ অনুৰণন ঘটাব বুলি আশা ব্যক্ত কৰে। তেওঁ লগতে আশা প্রকাশ কৰে যে এনেধৰণৰ তর্কপ্রতিযোগিতাৰ বিষয়বস্তুৰে সামগ্রিকভাৱে চিন্তা-যুক্তিৰে দায়বদ্ধ এখন মানৱ সমাজ গঢ়াৰ পথ প্রশস্ত কৰিব। উদ্বোধনী অনুষ্ঠানত মহাবিদ্যালয়খনৰ উপাধ্যক্ষ দিগন্ত কোঁৱৰ, যোৰহাটৰ নবীন চন্দ্র বৰদলৈ মহাবিদ্যালয়ৰ অধ্যক্ষ ডঃ দিগন্ত ফুকনকে প্রমুখ্য কৰি বহুসংখ্যক অতিথি, অধ্যাপক-অধ্যাপিকাবৃন্দ, শিক্ষার্থী উপস্থিত থকে। তর্কপ্রতিযোগিতাখনৰ সন্মানীয় অধ্যক্ষৰ আসন শুৱনি কৰে শিৱসাগৰৰ ফুলেশ্বৰী উচ্চতৰ মাধ্যমিক বালিকা বিদ্যালয়ৰ জ্যেষ্ঠ শিক্ষক তথা ৰাষ্ট্রীয় খ্যাতি সম্পন্ন নাট্যশিল্পী প্রশান্ত শর্মাই। সোণাৰীৰ পদ্মকুমাৰী বৰুৱা বালিকা বিদ্যালয়ৰ অৱসৰপ্রাপ্ত স্নাতকোত্তৰ শিক্ষক তথা বিশিষ্ট সমাজকর্মী মণি গগৈ আৰু বিশিষ্ট তার্কিক তথা সাংবাদিক কৌস্তুভমণি কাকতি, সমাজকর্মী ইছফাকুল হুছেইনে এইবাৰৰ তর্ক প্রতিযোগিতাত বিচাৰক ৰূপে অংশগ্রহণ কৰে। ঐতিহ্যপূর্ণ তর্ক প্রতিযোগিতাখনত শ্রেষ্ঠ তার্কিকৰ সন্মান লাভ কৰে বীৰাংগনা সতী সাধনী ৰাজ্যিক বিশ্ববিদ্যালয়ৰ দিব্যজ্যোতি নাথে, দ্বিতীয় স্থানত থাকে তেজপুৰ বিশ্ববিদ্যালয়ৰ ৰাহুল বোহন পাল; তৃতীয় আৰু চতুর্থ স্থানত থাকে ক্রমে বাহনা মহাবিদ্যালয়ৰ দীপাংকৰ শইকীয়া, আৰু অসম মেডিকেল কলেজৰ চাইনী ভূঞা। শ্রেষ্ঠ তার্কিকগৰাকীক বসন্ত কোঁৱৰ আৰু ভাৰতী কোঁৱৰ সোঁৱৰণী চলন্ত বঁটা আৰু ৭,০০০ টকাৰ নগদ পুৰস্কাৰ প্রদান কৰা হয়; দ্বিতীয় শ্রেষ্ঠ তার্কিক গৰাকীক বিতু সন্দিকৈ সোঁৱৰণী চলন্ত বঁটা আৰু নগদ ৬,০০০ টকা; তৃতীয় শ্রেষ্ঠ তার্কিক গৰাকীক শশীধৰ গগৈ সোঁৱৰণী চলন্তবঁটা আৰু ৫,০০০ টকা আৰু চতুর্থ শ্রেষ্ঠ তার্কিক গৰাকীক বিপিন চন্দ্র গগৈ সোঁৱৰণী চলন্ত বঁটা আৰু নগদ ৩,০০০ টকা প্রদান কৰা হয়। দলীয় শাখাত শ্রেষ্ঠ দলৰ খিতাপ অর্জন কৰে গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ে। শ্রেষ্ঠ দলটোত ঋতুৰাজ শইকীয়া আৰু অণুপ্রেৰণা মহন্তই প্রতিনিধিত্ব কৰিছিল। সুদীপ্ত শইকীয়া আৰু ৰাহুল বোহন পালে প্রতিনিধিত্ব কৰা তেজপুৰ বিশ্ববিদ্যালয়ৰ দলটি দ্বিতীয় শ্রেষ্ঠ দল ৰূপে বিবেচিত হয়। তৃতীয় শ্রেষ্ঠ দল হিচাপে ঘোষিত হয় জগন্নাথ বৰুৱা বিশ্ববিদ্যালয়। দলটিত জয়ন্ত মাধৱ শইকীয়া আৰু শ্রবণা বৰাই প্রতিনিধিত্ব কৰিছিল। শ্রেষ্ঠ দলক তনু কোঁৱৰ সোঁৱৰণী চলন্ত বঁটা আৰু নগদ ১৫,০০০টকা, দ্বিতীয় শ্রেষ্ঠ দলক যাদৱ সন্দিকৈ সোঁৱৰণী চলন্ত বঁটা আৰু নগদ ১০,০০০ টকা আৰু তৃতীয় শ্রেষ্ঠ দলক চম্পা পাটৰ সোঁৱৰণী চলন্তবঁটা আৰু নগদ ৭,০০০ টকা প্রদান কৰা হয়।

## নাজিৰাৰ লিগিৰী পুখুৰীত জুবিন দিৱস উদ্‌যাপনৰ আয়োজন

**নাজিৰা :** নাজিৰাৰ লিগিৰী পুখৰী আঞ্চলিক উন্নয়ন সমিতি আৰু প্রথম অসম আৱক্ষী বাহিনীৰ উদ্যোগত আৰু ৰাইজৰ সহযোগত অহা ১৯ ছেপ্টেম্বৰ তাৰিখে হিয়াৰ আমঠু প্রাণৰো প্রাণ জুবিন গার্গৰ প্রথম মৃত্যু তিথি উপলক্ষে লিগিৰী পুখুৰী পাৰত 'জুবিন দিৱস' উদ্‌যাপন কৰিবলৈ লোৱা হৈছে। জুবিন দিৱস উপলক্ষে ১৯ ছেপ্টেম্বৰ পুৱা ৮ বজাৰ পৰা চাফাই অভিযান, বিয়লি দুই বজাৰ পৰা নাজিৰা মহকুমা ভিত্তিত লিগিৰী পুখুৰী উচ্চ মাধ্যমিক বিদ্যালয়ত জুবিন গীত পৰিৱেশন প্রতিযোগিতা অনুষ্ঠিত কৰা হব । প্রতিযোগিতা ষষ্ঠ শ্রেণীৰ পৰা অষ্টম শ্রেণীলৈ ক শাখা আৰু নৱম শ্রেণীৰ পৰা দ্বাদশ শ্রেণীলৈ খ শাখা এই দুটা শাখাত অনুষ্ঠিত হব। প্রতিযোগী সকলে আগতীয়াকৈ ভ্রাম্যভাষ ৮৬৩৮২৮৪৩৪৯/৬০০০৭৪৩৯১৮ অথবা ৯৬৭৮৪১৮০৬২ মোবাইল নম্বৰত নাম ভর্তি কৰিব পাৰিব। সন্ধিয়া ৫-৩০ বজাত মাল্যার্পণ আৰু শ্রদ্ধাঞ্জলি অনুষ্ঠান । স্থানীয় সকলো ব্যক্তিকে সন্ধিয়া ৫-৩০ বজাত নিজৰ নিজৰ গৃহত আৰু লিগিৰী পুখুৰী পাৰত জুবিনৰ নামত এগছি চাকি জ্বলাবলৈ প্রথম অসম আৱক্ষী বাহিনীৰ অধিনায়ক মোছলেহউদ্দিন আহমেদ, সভাপতি ৰাজেন শর্মা, সম্পাদক মণ্ডলীৰ হৈ বিপুল ফুকন, দিলীপ শইকীয়া, জিয়াউদ্দিন আহমেদে ৰাইজলৈ অনুৰোধ জনাইছে।

## নাজিৰাৰ গেলেকীত চোৰাং গৰু সহ এজনক আটক

**নাজিৰা :** আজি কিছুদিন ধৰি অসমৰ বিভিন্ন প্রান্তৰ লগতে নাজিৰা সমজিলাৰ প্রান্তে প্রান্তে গৰু চোৰৰ দলে এক ত্রাসৰ সৃষ্টি কৰিছে। নাজিৰাৰ গেলেকী আৱক্ষী থানাৰ অন্তর্গত হাতীপট্টি বগীচাপৰি অঞ্চলৰ এঘৰ লোকৰ লগতে গোহালিৰ পৰা এজনী গাই সহ এটা পোৱালী গৰু চোৰ কৰি আনি গেলেকীলৈ যোৱা মূল পথত ৰখাই থোৱা এ এছ ০৪ বি চি - ৮৪৯৯ নম্বৰৰ বলেৰ গাড়ীত তুলি থকাৰ সময়তে গাঁওৰক্ষী বাহিনীৰ লোকৰ দৃষ্টি গোচৰ হয় আৰু তেওঁ লোকে গাড়ীৰ কাষলৈ যাওঁতেই চোৰৰ দলটোৰ দুজন পলায়ন কৰে আৰু এজনে কাষৰ এটা পুখুৰীত নামি



পদুম ফুলৰ পাতৰ তলত লুকাই থাকে। গাওঁ ৰক্ষী বাহিনীৰ লোকে লগে লগে গেলেকী আৱক্ষীক খবৰ দিয়াত আৱক্ষীৰ দল যথা স্থানত উপস্থিত হৈ চোৰৰ সন্ধান কৰাত পুখুৰীৰ পৰা এটা চোৰক আটক কৰিবলৈ সক্ষম হয়। আটকাধীন চোৰটো গেলেকীৰ মানৱ গগৈ বুলি আৱক্ষীয়ে জানিবলৈ দিয়ে আৰু পলায়ন কৰা আন দুটা চোৰক আটক কৰিবৰ বাবে অভিযান অব্যাহত ৰাখিছে। গেলেকীৰ আৱক্ষীয়ে গাই গৰু সহ পোৱালীটোক গৰাকীক চমজাই দিয়াৰ লগতে গৰু চুৰি কার্যত ব্যৱহাৰ কৰা বলেৰ গাড়ীখন জব্দ কৰি ঘটনা সন্দর্ভত এক গোচৰ পঞ্জীয়ন কৰিছে।

## এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

১৮ ছেপ্তেম্বৰ, ২০২৬ৰ পৰা ২৪ ছেপ্তেম্বৰ, ২০২৬লৈ

**মেষ :** আধ্যাত্মিক চেতনা বৃদ্ধি। কর্মক্ষেত্রত সুনাম অর্জন। বিদ্যার্থীৰ শুভ।

**বৃষ:** ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্রত শুভ ফল। আর্থিক ক্ষেত্রত বাধাৰ সম্মুখীন হব পাৰে। চেষ্টাৰ সফলতা লাভ।

**মিথুন:** কর্মদক্ষতাৰ সুনাম অর্জন। আর্থিক দিশত সপ্তাহটো শুভ। ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ পৰা লাভ।

**কর্কট:** আনন্দ ফূর্তিৰ মাজেৰে সপ্তাহটো পাৰ হব। কর্মব্যস্ততা বৃদ্ধি। ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্রত শুভ।

**সিংহ:** মানসিক সুখ শান্তি বৃদ্ধি। বিদ্যার্থীৰ বাৱে সপ্তাহটো শুভ। প্রতিযগিতামূলক কার্য্যত সফলতা অর্জন।

**কন্যা :** চেষ্টাৰ সফলতা অর্জন। মানসিক সুখ শান্তি থাকিব। সন্তানৰ সফলতা থাকিব।

**তুলা:** কর্মক্ষেত্রত সপ্তাহটো শুভ। চেষ্টাৰ বাধাৰ সৃষ্টি হব পাৰে। মানসিক সুস্থিৰতা থাকিব।

**বৃশ্চিক:** শাৰীৰিক ক্ষেত্রত সপ্তাহটো শুভ। অদৰকাৰী খং ৰাগ নিয়ন্ত্রণৰ চেষ্টা কৰিব। চেষ্টাৰ সফলতা লাভ।

**ধনু :** ধর্মীয় ক্ষেত্রত মনোনিবেশ থাকিব। মানসিক উদ্বিগ্নতা বৃদ্ধি হব পাৰে। আকস্মিক ধন প্রাপ্তিৰ সম্ভাৱনা আছে।

**মকৰ:** বৈদেশিক ক্ষেত্রৰ লগত জৰিত কাৰঞ্জয্যৰ পৰা লাভ। ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্রত উন্নতি। আদার্কাৰি বাদ বিবাদৰ পৰা আতৰি থাকক।

**কুম্ভ :** কর্মদক্ষতাৰ সমাদৰ লাভ। সামাজিক কার্য্যৰ পৰা লাভ।

**মীন:** আধ্যাত্মিক চেতনাৰ দ্বাৰা মানসিক শান্তি অর্জন। সামাজিক মান মর্য্যদা বৃদ্ধি। টোপনিৰ প্রতি মনোনিবেশ ৰাখিব।

- **হিতেন শর্মা শাস্ত্রী**
অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা
যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

# নাজিৰাত আত্মনিৰ্ভৰ অসম অভিযানৰ অধীনত ৭২ৰ উদ্যমীলৈ বিত্তীয় সাহায্য





জন জন বিচাৰ
...নয়নমণি ফুকন
নাজিৰা

যুৱ প্ৰজন্মক স্বাৱলম্বী কৰাৰ লগতে অসমত উদ্যোগীকৰণৰ সংস্কৃতি গঢ়ি তোলাৰ উদ্দেশ্যেৰে ৰূপায়ণ কৰা মুখ্যমন্ত্ৰীৰ আত্মনিৰ্ভৰ অসম অভিযান ১.০ আৰু ২.০ৰ অধীনত সমষ্টিভিত্তিক আৰ্থিক অনুদান বিতৰণ কাৰ্য্যসূচী নাজিৰা মেকীপুৰ পূজা ফিল্ডত অনুষ্ঠিত কৰা হয়।

নাজিৰা সমজিলা প্ৰশাসনৰ উদ্যোগত তথা উদ্যোগ আৰু বাণিজ্য বিভাগ, নাজিৰাৰ সহযোগত আয়োজন কৰা এই চেক বিতৰণ কাৰ্য্যসূচীত মুখ্য অতিথি হিচাপে উপস্থিত থাকে নাজিৰা বিধান সভা সমষ্টিৰ বিধায়ক ময়ুৰ বৰগোহাঁই।

সভাৰ আৰম্ভণিতে সমজিলা আয়ুক্ত প্ৰতিভা মেশ্ৰামে উপস্থিত সকলোকে এই বিত্তীয় সাহায্য কাৰ্যসূচীলৈ আন্তৰিক স্বাগতম জনাই আৰু কয় যে, মুখ্যমন্ত্ৰীৰ আত্মনিৰ্ভৰ অসম অভিযানে যুৱ-উদ্যমীসকলৰ বাবে কৰ্ম সংস্থাপনৰ সুযোগ সৃষ্টি কৰিব লগতে আন দহ জনকো নিযুক্তি প্ৰদান কৰাত সহায় কৰি অসমৰ অৰ্থনীতিক অধিক শক্তিশালী কৰি তুলিব ।

তদুপৰি, নাজিৰা সমজিলাৰ পশুপালন আৰু পশুচিকিৎসা, মীন, কৃষি আদি বিভাগৰ মুৰব্বী বিষয়াসকলে মুখ্যমন্ত্ৰীৰ আত্মনিৰ্ভৰ অসম অভিযানৰ সফল ৰূপায়ণ সন্দৰ্ভত নিজ নিজ বিভাগৰ অধীনত ৰূপায়িত বিভিন্ন কাৰ্যসূচী আৰু অগ্ৰগতিৰ বিষয়ে বক্তব্য আগবঢ়ায়।

নাজিৰা ষ্টেট বেংক অৰ ইণ্ডিয়াৰ মুখ্য প্ৰবন্ধকেও অভিযানটোৰ সফল ৰূপায়ণত বেংকৰ ভূমিকা আৰু সহযোগিতাৰ বিষয়ে অৱগত কৰে।

মাননীয় মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাৰ উপস্থিতিত গুৱাহাটীৰ খানা পাৰাস্থিত জ্যোতি-বিষ্ণু আন্তৰ্জাতিক কলা মন্দিৰত অনুষ্ঠিত হোৱা কেন্দ্ৰীয় কাৰ্য্যসূচীৰ পোনপটীয়া সম্প্ৰচাৰ কৰা হয়। ইয়াৰ পিছতে বিধায়ক মহোদয়ে নিৰ্বাচিত কেইগৰাকী মান ব্যক্তিক মঞ্চত চেক বিতৰণ কৰে।

উল্লেখ্য যে, অনুষ্ঠানত নাজিৰা বিধানসভা সমষ্টিৰ চিএমএএএ ১.০ অন্তৰ্গত ১৪০ গৰাকী হিতাধিকাৰীক দ্বিতীয় পৰ্যায়ৰ ১ লাখ টকাকৈ আৰু চিএমএএএ ২.০ৰ অধীনত ৫৮১ গৰাকী হিতাধিকাৰীক দ্বিতীয় কিস্তিৰ ২৫,০০০ টকাকৈ বিত্তীয় সাহায্য প্ৰদান কৰা হয়। ইয়াৰ জৰিয়তে সৰ্বমুঠ ৭২১ গৰাকী উদ্যমী হিতাধিকাৰী উপকৃত হব।

অনুষ্ঠানত নাজিৰা সমজিলাৰ সহকাৰী আয়ুক্ত অৰুণাভ সোণোৱাল, পৰ্চিয়া খনিকৰ, নাজিৰা উদ্যোগ আৰু বাণিজ্য বিভাগৰ সহকাৰী সঞ্চালক অৰুণাভ বানিক্য, নাজিৰা, চুকাফা আৰু আঠখেল জিলা পৰিষদৰ সদস্য সকল ক্ৰমে মামু পাটৰ, ৰুবী সন্দিকৈ বৰা আৰু মৌচুমী গগৈ, নাজিৰা আৰু আমগুৰি আঞ্চলিক পঞ্চায়তৰ সভানেত্ৰী ক্ৰমে পৰিণীতা শইকীয়া বৰুৱা আৰু আশাবন্তি বদ্ৰ তিৰ্কি, মেকীপুৰ গাওঁ পঞ্চায়তৰ সভানেত্ৰী জয়ামনি গগৈ, সংবাদ মাধ্যমৰ ব্যক্তি সকল, হিতাধিকাৰী সকল আৰু গৰিষ্ঠ সংখ্যক স্থানীয় ৰাইজ উপস্থিত থাকে।

## বাঁহে মুকলি কৰিছে কৰ্মসংস্থান উদ্যোগিতাৰ নতুন দুৱাৰ : হিমন্ত



জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী

বিশ্ব বাঁহ দিৱস উপলক্ষে অসমৰ মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই ৰাজ্যখনৰ বাঁহ সম্পদৰ বৰ্ধিত ব্যৱহাৰৰ ওপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰি কয় যে বাঁহ এতিয়া কেৱল পৰম্পৰাগত ব্যৱহাৰৰ সামগ্ৰী হৈ থকা নাই। বাঁহে ৰাজ্যখনত কৰ্মসংস্থান, জীৱিকা, উদ্যোগিতা আৰু নতুন উদ্যোগৰ বাবে সম্ভাৱনাৰ দুৱাৰ মুকলি কৰিছে।

মুখ্যমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে কয় যে অসমৰ বাঁহৰ পৰা দৈনন্দিন ব্যৱহাৰৰ সামগ্ৰীৰ পৰা আৰম্ভ কৰি বিভিন্ন ঔদ্যোগিক সামগ্ৰীলৈকে প্ৰস্তুত কৰা হৈছে। ইয়াৰ ফলত স্থানীয় লোকসকলৰ বাবে দক্ষতা বিকাশ, জীৱিকা আৰু স্ব-নিয়োজনৰ নতুন সুযোগ সৃষ্টি হৈছে।

বাঁহৰ ব্যৱহাৰ হস্তশিল্প, গৃহ নিৰ্মাণ, আচবাব, খাদ্যজাত সামগ্ৰীকে ধৰি বিভিন্ন ক্ষেত্ৰলৈ সম্প্ৰসাৰিত হৈছে। পৰম্পৰাগত বাঁহশিল্পক আধুনিক বজাৰ আৰু নতুন উদ্যোগৰ সৈতে সংযোগ কৰিব পাৰিলে ৰাজ্যৰ স্থানীয় অৰ্থনীতি অধিক শক্তিশালী হোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে।

মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে লগতে কয় যে বাঁহভিত্তিক উদ্যোগৰ সম্প্ৰসাৰণে অসমৰ যুৱক-যুৱতী আৰু স্থানীয় উদ্যোগীসকলৰ বাবে নতুন কৰ্মসংস্থান আৰু ব্যৱসায়িক সুযোগ সৃষ্টি কৰিব পাৰে। একে সময়তে বাঁহৰ বহনক্ষম ব্যৱহাৰে পৰিবেশৰ সৈতে সামঞ্জস্যপূৰ্ণ অৰ্থনৈতিক বিকাশতো সহায় কৰিব পাৰে।

উল্লেখ্য যে প্ৰতি বছৰে ১৮ ছেপ্টেম্বৰত বিশ্ব বাঁহ দিৱস পালন কৰা হয়। বাঁহৰ গুৰুত্ব, ইয়াৰ বহনক্ষম ব্যৱহাৰ আৰু অৰ্থনৈতিক সম্ভাৱনাৰ বিষয়ে সজাগতা সৃষ্টি কৰাই এই দিৱসৰ মূল উদ্দেশ্য।

## অসমৰ পাঁচটা হাতী তামিলনাড়ুৰ মন্দিৰলৈ স্থানান্তৰত তাৎক্ষণিক স্থগিতাদেশ নিদিলে গুৱাহাটী উচ্চ ন্যায়ালয়ে

জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী

অসমৰ পৰা তামিলনাড়ুৰ মন্দিৰলৈ পাঁচটা বন্দী হাতী স্থানান্তৰ কৰাৰ প্ৰস্তাৱত তাৎক্ষণিক স্থগিতাদেশ জাৰি কৰিবলৈ অস্বীকাৰ কৰিছে গুৱাহাটী উচ্চ ন্যায়ালয়ে। আদালতে প্ৰাথমিকভাৱে কয় যে সংশ্লিষ্ট কৰ্তৃপক্ষৰ পৰা প্ৰয়োজনীয় সকলো আইনগত অনুমতি লাভ কৰা থাকিলে হাতী স্থানান্তৰ বন্ধ কৰাৰ কোনো কাৰণ দেখা পোৱা হোৱা নাই।

মুখ্য ন্যায়াধীশ আশুতোষ কুমাৰ আৰু ন্যায়াধীশ অৰুণ দেৱ চৌধুৰীৰ দ্বৈত বিচাৰপীঠে বোহিত চৌধুৰীয়ে দাখিল কৰা অন্তৰ্বৰ্তীকালীন আবেদনখনৰ শুনানি গ্ৰহণ কৰে। আবেদনখন বন্দী হাতীৰ মালিকীস্বত্ব, নিয়ন্ত্ৰণ, তত্বাৱধান আৰু অধিকাৰ সম্পৰ্কীয় বন্যপ্ৰাণী সংৰক্ষণ আইন, ১৯৭২ৰ কেইটামান বিধানক প্ৰত্যাহ্বান জনোৱা মূল গোচৰৰ সৈতে জড়িত।

আবেদনকাৰীৰ পক্ষই আশংকা প্ৰকাশ কৰে যে ব্যক্তিগত মালিকানাধীন পাঁচটা হাতী শীঘ্ৰে তামিলনাড়ুৰ মন্দিৰলৈ লৈ যোৱা হ'ব। তামিলনাড়ুত পূৰ্বে স্থানান্তৰ কৰা 'জয়মালা' নামৰ এটা হাতীৰ নিৰ্ধাৰিত সময়তকৈ অধিককাল থকাৰ ঘটনা আৰু মন্দিৰলৈ নিয়া হাতীৰ সম্ভাব্য দুৰ্ব্যৱহাৰৰ বিষয়টোও আদালতৰ সম্মুখত উত্থাপন কৰা হয়।



অৱশ্যে আদালতে কয় যে বৰ্তমানৰ আইন অনুসৰি প্ৰয়োজনীয় অনুমতি লাভ কৰা থাকিলে হাতী স্থানান্তৰ নিষিদ্ধ কৰা হোৱা নাই। অসম চৰকাৰে তামিলনাড়ুত অধিককাল থকা জয়মালাক সুৰক্ষিতভাৱে অসমলৈ ঘুৰাই অনাৰ বাবেও ইতিমধ্যে উচ্চন্যায়ালয়ৰ কাষ চাপিছে বুলি আদালতে উল্লেখ কৰে। শুনানিৰ সময়ত অসমৰ অতিৰিক্ত মহাধিবক্তা পি.এন. গোস্বামীয়ে জনায় যে পাঁচটা হাতী স্থানান্তৰৰ বাবে প্ৰয়োজনীয় সকলো অনুমতি লাভ কৰা হৈছে। ধৰ্মীয় উদ্দেশ্যত তামিলনাড়ুলৈ স্থানান্তৰৰ সময়ত হাতীক সুৰক্ষিতভাৱে নিয়াৰ বাবে সকলো সম্ভৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা হ'ব বুলিও তেওঁ আদালতক আশ্বাস দিয়ে।

আদালতে তাৎক্ষণিক স্থগিতাদেশ নিদিলেও বন্দী হাতীৰ স্বাস্থ্য আৰু কল্যাণ নিশ্চিত কৰাৰ লগতে অননুমোদিত বা অসৎ উদ্দেশ্যত হাতীৰ ব্যৱহাৰ ৰোধ কৰাৰ ওপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰে। আবেদনখন পৰবৰ্তী শুনানিলৈকে মুলতবি ৰখা হৈছে।

মূল গোচৰ আৰু অন্তৰ্বৰ্তীকালীন আবেদনখন একেলগে ১৫ অক্টোবৰ, ২০২৬ত শুনানিৰ বাবে তালিকাভুক্ত কৰিবলৈ আদালতে নিৰ্দেশ দিছে।

সম্পাদকীয়

## বৈভৱৰ বাবে অপেক্ষা কিমান দীঘলীয়া ?

ভাৰতীয় ক্ৰিকেটত প্ৰতিভাৰ অভাৱ নাই, কিন্তু প্ৰতিভাক সুযোগ দিয়াৰ ক্ষেত্ৰত সিদ্ধান্ত কেতিয়াবা অধিক কঠিন হৈ পৰে। আফগানিস্তানৰ বিৰুদ্ধে সদ্যসমাপ্ত টি-২০ শৃংখলাত ১৫ বছৰীয়া বৈভৱ সূৰ্যবংশীয়ে এখনো খেলাৰ সুযোগ নোপোৱাটোৱে সেই প্ৰশ্নটোক পুনৰ সম্মুখলৈ আনিছে-ভৱিষ্যতৰ তাৰকাক কেতিয়া সুযোগ দিয়া হ'ব?

জিম্বাবুৱে ভ্ৰমণত বৈভৱে অসাধাৰণ প্ৰদৰ্শনেৰে শৃংখলাৰ শ্ৰেষ্ঠ খেলুৰৈৰ সন্মান লাভ কৰিছিল। ১৯৬.১০ ষ্ট্ৰাইক ৰেটে ১৫১ ৰান সংগ্ৰহ কৰা এই কিশোৰ প্ৰতিভাই ইতিমধ্যে নিজৰ সামৰ্থৰ পৰিচয় দিছে। তথাপি সঞ্জু ছেমছনৰ দললৈ প্ৰত্যাৱৰ্তনৰ পিছত তেওঁ মূল একাদশৰ বাহিৰত থাকিল।

মুখ্য প্ৰশিক্ষক গৌতম গম্ভীৰে সিদ্ধান্তটোৰ ব্যাখ্যা দি কয় যে ছেমছনে বহু বছৰ ধৰি ভাৰতৰ হৈ নিজৰ সামৰ্থ্য প্ৰমাণ কৰিছে আৰু বিশ্বকাপ জয়ী দলৰ সংমিশ্ৰণলৈ উভতি যোৱাটো তেওঁৰ লক্ষ্য আছিল। এই যুক্তিৰ ক্ৰিকেটীয় ভিত্তি নিশ্চয় আছে। ছেমছনেও আফগানিস্তানৰ বিৰুদ্ধে তিনিখন খেলত ১১৭ ৰান কৰি দুটা অৰ্ধশতকৰে নিজৰ দাবী শক্তিশালী কৰিছে।

কিন্তু আন এটা প্ৰশ্নও সমানেই গুৰুত্বপূৰ্ণ-এটা দলত অভিজ্ঞতা আৰু বৰ্তমানৰ ফলাফলৰ মূল্যায়নৰ লগতে উদীয়মান প্ৰতিভাৰ বিকাশৰ পথটো কেনেকৈ মুকলি কৰা হ'ব?

গম্ভীৰে স্পষ্ট কৰিছে যে বৈভৱক নিজৰ সুযোগৰ বাবে অপেক্ষা কৰিব লাগিব আৰু সুযোগ আহিলে তেওঁক দীঘলীয়া সময় দিয়াৰ পৰিকল্পনা আছে। কথাটো আশাব্যক। কিন্তু প্ৰতিভাৰ বিকাশ কেৱল অপেক্ষাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ নকৰে; সঠিক সময়ত সুযোগ, দায়িত্ব আৰু বিশ্বাসো প্ৰয়োজন।

ভাৰতীয় ক্ৰিকেটৰ শক্তি হৈছে ইয়াৰ গভীৰ প্ৰতিভাৰ ভঁৰাল। সেয়ে বৈভৱৰ দৰে কিশোৰ প্ৰতিভাৰ ক্ষেত্ৰত প্ৰশ্নটো কেৱল তেওঁ আজি খেলিব নে নাই, সেয়া নহয়। প্ৰশ্নটো হ'ল-তেওঁৰ দৰে প্ৰতিভাক ভৱিষ্যতৰ বাবে কেনেদৰে গঢ়ি তোলা হ'ব?

সঞ্জু বনাম বৈভৱক লৈ বিতৰ্ক সৃষ্টি কৰাৰ সলনি ভাৰতীয় ক্ৰিকেটৰ উচিত হ'ব দুয়োৰে বাবে উপযুক্ত ভূমিকা আৰু পথ নিৰ্ধাৰণ কৰা। কাৰণ সুযোগৰ অপেক্ষা কৰিবলগীয়া হয় ঠিকেই, কিন্তু অপেক্ষাই যাতে প্ৰতিভাৰ গতি থমকাই নিদিয়ে-সেই দায়িত্ব দলীয় ব্যৱস্থাপনাৰো।

# বিশ্বমঞ্চত মোদীৰ প্ৰভাৱ, দেশত ৰাজনীতিৰ নতুন সমীকৰণ

জন জন বিচাৰ
...ডিমেশ চতুৰ্বেদী

নৰেন্দ্ৰ মোদীৰ ৰাজনৈতিক যাত্ৰা ভাৰতীয় ৰাজনীতিৰ অন্যতম গুৰুত্বপূৰ্ণ অধ্যায়। গুজৰাটৰ মুখ্যমন্ত্ৰী হিচাপে দীঘলীয়া সময়ৰ পিছত চন্ধৱচ্ছ চনত দেশৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী হোৱা মোদীয়ে চন্ধৱজ্ঞ চনত পুনৰ কেন্দ্ৰত চৰকাৰ গঠন কৰে আৰু চন্ধৱচ্ছ চনৰ জ্ঞ জুনত তৃতীয়বাৰৰ বাবে প্ৰধানমন্ত্ৰী হিচাপে শপত গ্ৰহণ কৰে।

তিনিটা কাৰ্যকালৰ এই যাত্ৰাত তেওঁৰ ৰাজনৈতিক পৰিচয় কেৱল নিৰ্বাচনী ৰাজনীতিৰ মাজতে সীমাবদ্ধ হৈ থকা নাই। বৈদেশিক নীতি, ডিজিটেল প্ৰশাসন, আন্তঃগাঁথনি, কল্যাণমূলক আঁচনি, সাংস্কৃতিক ৰাজনীতি, সামাজিক মাধ্যম আৰু বৃহৎ জনসংযোগ-প্ৰায় প্ৰতিটো ক্ষেত্ৰতে তেওঁৰ নেতৃত্বৰ এক নিৰ্দিষ্ট ছাপ পৰিছে। কিন্তু এই প্ৰভাৱৰ মূল্যায়ন কৰোঁতে কেৱল সমৰ্থকৰ দৃষ্টিভংগী অথবা বিৰোধীৰ অভিযোগ-এটামাত্ৰ দিশত ৰৈ যোৱাটোও যথেষ্ট নহয়। মোদী যুগক বুজিবলৈ সফলতা, বিতৰ্ক, নীতি আৰু তাৰ প্ৰভাৱ-সকলোকে একেলগে চাব লাগিব।

**গুটিনিৰপেক্ষতাৰ পৰা কৌশলগত স্বায়ত্তশাসনলৈ**

মোদী চৰকাৰৰ বৈদেশিক নীতিৰ অন্যতম উল্লেখযোগ্য বৈশিষ্টঞ্জয হৈছে একে সময়তে বিভিন্ন শক্তিশালী দেশৰ সৈতে সম্পৰ্ক ৰক্ষা কৰাৰ চেষ্টা। ভাৰত আমেৰিকা, ৰাছিয়া, ইউৰোপ, জাপান, ইজৰাইল, উপসাগৰীয় দেশ আৰু দক্ষিণ-পূব এছিয়াৰ দেশসমূহৰ সৈতে একাধিক ক্ষেত্ৰত সহযোগিতা বৃদ্ধি কৰিছে।

ইয়াক বহু বিশ্লেষকে 'বহুমুখী সংযুক্তি' বা 'মাল্টি-এলাইনমেণ্ট' বুলি ব্যাখ্যা কৰে। অৱশ্যে এই নীতিক ভাৰতৰ পৰম্পৰাগত গুটিনিৰপেক্ষতাৰ সম্পূৰ্ণ বিচ্ছেদ বুলি কোৱাটো সৰলীকৰণ হ'ব। বৈদেশিক পৰিক্ৰমা মন্ত্ৰালয়ৰ নথিতো ভাৰতৰ কৌশলগত স্বায়ত্তশাসন, জাতীয় স্বাৰ্থ আৰু পৰিৱৰ্তিত আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় পৰিস্থিতিৰ সৈতে বাস্তৱবাদীভাৱে সম্পৰ্ক গঢ়াৰ ওপৰত গুৰুত্ব দিয়া হৈছে।

ৰাছিয়া-ইউক্ৰেইন সংঘাতৰ সময়ত ভাৰতৰ স্থিতি ইয়াৰ এটা উল্লেখযোগ্য উদাহৰণ। পদ্ৰিশ্চমীয়া দেশসমূহৰ সৈতে ভাৰতৰ কৌশলগত সম্পৰ্ক গভীৰ হৈ থকাৰ সময়তো ৰাছিয়াৰ সৈতে শক্তি, প্ৰতিৰক্ষা আৰু অন্যান্য ক্ষেত্ৰৰ সম্পৰ্ক সম্পূৰ্ণৰূপে পৰিত্যাগ কৰা হোৱা নাই। এই নীতিক সমৰ্থকসকলে 'কৌশলগত স্বায়ত্তশাসন' বুলি ব্যাখ্যা কৰে।

**'গ্ল'ৰেল ছাউথ'ৰ কণ্ঠস্বৰ**

মোদী চৰকাৰৰ বৈদেশিক নীতিৰ আন এটা উল্লেখযোগ্য দিশ হৈছে উন্নয়নশীল দেশসমূহৰ সমস্যা আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় মঞ্চত উত্থাপন কৰাৰ চেষ্টা। চন্ধচ্চচনত ভাৰতৰ উদ্যোগত 'ভইচ অৱ গ্ল'ৰেল ছাউথ ছামিট' অনুষ্ঠিত হৈছিল। উন্নয়ন, খাদ্য আৰু শক্তি সুৰক্ষা, ঋণ, জলবায়ু পৰিৱৰ্তন আৰু বিশ্ব শাসন ব্যৱস্থাৰ সংস্কাৰৰ দৰে বিষয়ত উন্নয়নশীল দেশসমূহৰ অগ্ৰাধিকাৰক আলোচনালৈ অনা হৈছিল।

এই ক্ষেত্ৰত মোদী নেতৃত্বৰ এটা লক্ষ্য স্পষ্ট-ভাৰতক কেৱল দক্ষিণ এছিয়াৰ শক্তি হিচাপে নহয়, বৰং বিশ্বৰ বিভিন্ন শক্তিৰ মাজত এক গুৰুত্বপূৰ্ণ অংশীদাৰ হিচাপে প্ৰতিষ্ঠা কৰা।

**জনসংযোগৰ নতুন ৰাজনীতি**

মোদীৰ ৰাজনৈতিক কৌশলৰ অন্যতম শক্তিশালী দিশ হৈছে জনসংযোগ। 'মন কি বাত', বৃহৎ জনসভা, সামাজিক মাধ্যম আৰু দৃশ্যমান ৰাজনৈতিক কাৰ্যসূচীৰ জৰিয়তে তেওঁ পোন পটীয়াকৈ জনসাধাৰণৰ সৈতে যোগাযোগৰ এক শক্তিশালী পৰিকাঠামো গঢ়ি তুলিছে।

ইয়াৰ ফলত পৰম্পৰাগত ৰাজনৈতিক মধ্যস্থতাকাৰীৰ ভূমিকা বহু ক্ষেত্ৰত সলনি হৈছে। কোনো নীতি বা চৰকাৰী আঁচনিৰ বাৰ্তা দলীয় সংগঠন, সংবাদমাধ্যম বা স্থানীয় ৰাজনৈতিক নেতাৰ মাজেৰে যোৱাৰ পৰিৱৰ্তে পোনপটীয়াকৈ প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ পৰা নাগৰিকৰ ওচৰলৈ গৈছে।

এই মডেলৰ সমৰ্থকসকলে ইয়াক শক্তিশালী জনসংযোগ বুলি দেখে। সমালোচকসকলে অৱশ্যে কয় যে ৰাজনীতি যদি অতি বেছি ব্যক্তিকেন্দ্ৰিক যোগাযোগৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল হয়, তেন্তে নীতি আৰু প্ৰতিষ্ঠানৰ তুলনাত ব্যক্তিৰ ভাবমূৰ্তি অধিক গুৰুত্বপূৰ্ণ হৈ পৰাৰ আশংকা থাকে।

**সিদ্ধান্ত আৰু বিতৰ্ক-দুয়ো একেলগে**

মোদী চৰকাৰৰ কেইবাটাও সিদ্ধান্ত ভাৰতীয় ৰাজনীতি আৰু অৰ্থনীতিত গভীৰ প্ৰভাৱ পেলোৱা বুলি ধৰা হয়। জিএছটি, নোটবন্দী, ধাৰা জ্ঞ্জাৰ সাংবিধানিক পৰিৱৰ্তন, ডিজিটেল ভাৰত, জন-ধন আঁচনি, প্ৰত্যক্ষ লাভ হস্তান্তৰ, নতুন অপৰাধ আইন আৰু আন্তঃগাঁথনি উন্নয়ন-এইবোৰৰ প্ৰতিটোৱেই নিজস্বভাৱে বৃহৎ নীতি-পদক্ষেপ।

কিছুমান সিদ্ধান্তক চৰকাৰে প্ৰশাসনিক সৰলীকৰণ, স্বচ্ছতা বা ৰাষ্ট্ৰীয় একীকৰণৰ পদক্ষেপ হিচাপে ব্যাখ্যা কৰিছে। আনহাতে বিৰোধী দল আৰু সমালোচকসকলে কিছুমান সিদ্ধান্তৰ সামাজিক, অৰ্থনৈতিক বা সাংবিধানিক প্ৰভাৱক লৈ প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিছে।

সেয়েহে 'সাহসী সিদ্ধান্ত' বা 'ভুল সিদ্ধান্ত'-এটা শব্দৰে এই পদক্ষেপসমূহৰ মূল্যায়ন কৰাতকৈ প্ৰতিটো নীতিৰ উদ্দেশ্য, বাস্তৱ ফলাফল আৰু জনসাধাৰণৰ ওপৰত প্ৰভাৱ পৃথকে পৰীক্ষা কৰাটো অধিক যুক্তিসংগত।

**ডিজিটেল ভাৰত : প্ৰশাসনৰ নতুন মুখ**

ডিজিটেল প্ৰযুক্তি মোদী চৰকাৰৰ শাসন মডেলৰ অন্যতম দৃশ্যমান অংশ। আধাৰ, জন-ধন, মোবাইল সংযোগ আৰু প্ৰত্যক্ষ লাভ হস্তান্তৰৰ সংযোগে চৰকাৰী সাহায্যৰ ধন পোন পটীয়াকৈ হিতাধিকাৰীৰ বেংক একাউণ্টলৈ পঠিওৱাৰ পৰিসৰ বৃদ্ধি কৰিছে।

ইউপিআইৰ বিস্তাৰো এই পৰিৱৰ্তনৰ অন্যতম উদাহৰণ। এনপিচিআইৰ তথ্য অনুসৰি চন্ধচ্ছ চনৰ আগষ্ট মাহত ইউপিআইত জ্ঞষ্টচ্চা বেংক সক্ৰিয় আছিল আৰু মাহটোত চচ্ছ,গুজ্ঞজ্ঞ.জ্ঞছ মিলিয়ন লেনদেন সম্পন্ন হৈছিল। এই পৰিৱৰ্তনে নগদবিহীন লেনদেন, ক্ষুদ্ৰ ব্যৱসায় আৰু ডিজিটেল অৰ্থনীতিক নতুন গতি দিছে। কিন্তু ডিজিটেল ব্যৱস্থাৰ বিস্তাৰৰ লগে লগে তথ্য-গোপনীয়তা, চাইবাৰ সুৰক্ষা আৰু ডিজিটেল বিভাজনৰ প্ৰশ্নও গুৰুত্বপূৰ্ণ হৈ পৰিছে।

**কল্যাণমূলক ৰাজনীতি আৰু 'লাভাৰ্থী' ভিত্তি**

উজ্জবলা, জন-ধন, প্ৰধানমন্ত্ৰী আৱাস, বিনামূলীয়া খাদ্যশস্য, স্বাস্থ্যসেৱা আৰু বিভিন্ন প্ৰত্যক্ষ সাহায্য আঁচনিৰ জৰিয়তে চৰকাৰে বৃহৎ সংখ্যক নাগৰিকক লক্ষ্য কৰি কল্যাণমূলক নীতি ৰূদ্ৰপায়ণ কৰিছে।

এই আঁচনিসমূহে এক নতুন 'লাভাৰ্থী' ৰাজনীতিৰ সৃষ্টি কৰিছে বুলি ৰাজনৈতিক বিশ্লেষণত আলোচনা হয়। ইয়াৰ অৰ্থ হৈছে-জাতি, ধৰ্ম বা পৰম্পৰাগত ভোটবেংকৰ বাহিৰেও চৰকাৰী আঁচনিৰ প্ৰত্যক্ষ সুবিধা লাভ কৰা লোকসকল এক গুৰুত্বপূৰ্ণ ৰাজনৈতিক গোটত পৰিণত হৈছে।

অৱশ্যে আঁচনি ঘোষণা আৰু বাস্তৱ সুবিধা লাভ-দুয়োটাৰ মাজত পাৰ্থক্য আছে। সেয়েহে কোনো আঁচনিৰ মূল্যায়নত কিমানজনক ঘোষণা কৰা হৈছে তাৰ লগতে কিমানজনে বাস্তৱতে সুবিধা পাইছে, সুবিধাৰ মান কেনেকুৱা আৰু সেই সুবিধা কিমান দিন টিকিছে-এইবোৰো বিবেচনা কৰিব লাগিব।

**আন্তঃগাঁথনি : দৃশ্যমান পৰিৱৰ্তনৰ ৰাজনীতি**

ৰাষ্ট্ৰীয় ঘাইপথ, ৰেল, বিমানবন্দৰ, বন্দৰ, মালবাহী কৰিডৰ আৰু নগৰীয়া আন্তঃগাঁথনিৰ ওপৰত কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ গুৰুত্ব মোদী যুগৰ আন এটা বৈশিষ্ট্য। 'পিএম গতিশক্তি'ৰ দৰে পৰিকল্পনাই বিভিন্ন আন্তঃগাঁথনি প্ৰকল্পক একে পৰিকাঠামোৰ অধীনত সমন্বয় কৰাৰ লক্ষ্য লৈছে। ইয়াৰ ৰাজনৈতিক গুৰুত্বও আছে। কাৰণ পথ, ৰেল, বিমানবন্দৰ বা নতুন নগৰীয়া প্ৰকল্প নাগৰিকৰ দৈনন্দিন জীৱনত দৃশ্যমান। ফলত উন্নয়নৰ ৰাজনীতি কেৱল পৰিসংখ্যাৰ বিষয় হৈ নাথাকি চকুৰ সন্মুখৰ বাস্তৱ পৰিৱৰ্তনৰ সৈতে জড়িত হৈ পৰে।

**হিন্দুত্ব, সংস্কৃতি আৰু ৰাজনৈতিক পৰিচয়**

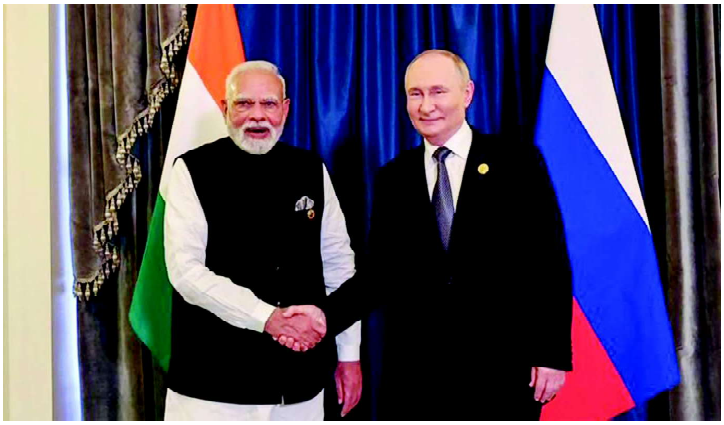
মোদী যুগৰ ৰাজনীতিৰ আলোচনা হিন্দুত্ব আৰু সাংস্কৃতিক পৰিচয়ৰ প্ৰশ্ন অবিহনে সম্পূৰ্ণ নহয়। ৰাম মন্দিৰ, সাংস্কৃতিক ঐতিহ্য, যোগ, ভাৰতীয় পৰম্পৰা আৰু ৰাষ্ট্ৰীয় গৌৰৱৰ প্ৰচাৰে বিজেপিৰ ৰাজনৈতিক বয়ানত বিশেষ স্থান লাভ কৰিছে।

সমৰ্থকসকলে ইয়াক ভাৰতীয় সংস্কৃতি আৰু সভ্যতাৰ আত্মবিশ্বাসৰ পুনৰুত্থান হিচাপে ব্যাখ্যা কৰে। আনহাতে সমালোচকসকলে ধৰ্মীয় মেৰুকৰণ, সংখ্যালঘুৰ অধিকাৰ আৰু ধৰ্মনিৰপেক্ষ সাংবিধানিক কাঠামোৰ ওপৰত ইয়াৰ সম্ভাব্য প্ৰভাৱক লৈ প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰে।

এই বিতৰ্ক ভাৰতীয় গণতন্ত্ৰৰ বাবে গুৰুত্বপূৰ্ণ। কাৰণ সাংস্কৃতিক গৌৰৱ আৰু সকলো নাগৰিকৰ সমান সাংবিধানিক অধিকাৰ-দুয়োটাৰ মাজত ভাৰসাম্য ৰক্ষা কৰাটো যিকোনো চৰকাৰৰ দায়িত্ব।

# ৰাছিয়াৰ তেলক লৈ আমেৰিকাৰ চাপ, ভাৰতৰ স্পষ্ট বার্তা-শক্তি সুৰক্ষাত আপোচ নহয়

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী



ৰাছিয়াৰ পৰা তেল ক্ৰয়ক কেন্দ্ৰ কৰি ভাৰত আৰু আমেৰিকাৰ মাজত পুনৰ চাপ-প্ৰতিচাপৰ পৰিস্থিতি সৃষ্টি হৈছে। ইউক্ৰেইন যুদ্ধৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত ৰাছিয়াৰ শক্তি আয়ত চাপ সৃষ্টি কৰাৰ লক্ষ্যৰে আমেৰিকাৰ কংগ্ৰেছে নতুন নিষেধাজ্ঞা বিধেয়ক গৃহীত কৰাৰ পিছতে ভাৰত স্পষ্ট কৰি দিছে-দেশৰ ১৪০ কোটি নাগৰিকৰ শক্তি সুৰক্ষা কোনো বাহ্যিক চাপৰ অধীনত নির্ধাৰিত নহ'ব। ভাৰতীয় বৈদেশিক পৰিক্ৰমা মন্ত্ৰালয়ে কয় যে বিশ্ব বজাৰৰ পৰিৱর্তিত পৰিস্থিতি অনুসৰি ভাৰত বিভিন্ন উৎসৰ পৰা শক্তি ক্ৰয় অব্যাহত ৰাখিব।

১৬ ছেপ্টেম্বৰত আমেৰিকাৰ প্ৰতিনিধি সভাই 'Lindsey O. Graham Sanctioning Russia and Iran Act of 2026' ২৬২-১৫৯ ভোটত গৃহীত কৰে। ইয়াৰ আগতে আগষ্ট মাহত ছিনেটে ৮৬-১১ ভোটত বিধেয়কটো অনুমোদন কৰিছিল। নতুন বিধেয়কখনে ৰাছিয়াৰ শক্তি খণ্ড, বেংক, বিষয়া আৰু নিষেধাজ্ঞা একাই চলিবলৈ ব্যৱহৃত 'ছাঁয়া নৌবহৰ'ৰ বিৰুদ্ধে ব্যৱস্থা কঠোৰ কৰাৰ লগতে ৰাছিয়াৰ তেল-গেছৰ বৃহৎ ক্ৰেতা দেশসমূহৰ ওপৰত ১০০ শতাংশ পর্যন্ত শুল্ক আৰোপ কৰাৰ ক্ষমতা আমেৰিকাৰ ৰাষ্ট্ৰপতিক দিয়ে।

ইয়াত এটা গুৰুত্বপূর্ণ কথা হ'ল- ১০০ শতাংশ শুল্ক স্বয়ংক্ৰিয়ভাৱে কার্যকৰী হোৱা নাই। বিধেয়কখন এতিয়া ৰাষ্ট্ৰপতি ড'নাল্ড ট্ৰাম্পৰ হাতত আছে আৰু পৰৱর্তী সিদ্ধান্ত ওপৰত ইয়াৰ বাস্তৱ প্ৰভাৱ নির্ভৰ কৰিব। অর্থাৎ কংগ্ৰেছে সম্ভাব্য শুল্কৰ পথ মুকলি কৰিছে, কিন্তু কিমান শুল্ক, কেতিয়া আৰু কেনেদৰে প্ৰয়োগ কৰা হ'ব সেয়া এতিয়াও নির্ধাৰিত নহয়।

**শক্তি সুৰক্ষা কিয় ইমান গুৰুত্বপূর্ণ?**

ভাৰতৰ বাবে ৰাছিয়াৰ তেল ক্ৰয়ৰ বিষয়টো কেৱল কূটনৈতিক সম্পর্কৰ প্ৰশ্ন নহয়; ইয়াৰ সৈতে দেশৰ শক্তি সুৰক্ষা, আমদানি ব্যয় আৰু অর্থনীতিৰ স্থিৰতা জড়িত। ইউক্ৰেইন যুদ্ধ আৰম্ভ হোৱাৰ পিছত পদ্ৰিশ্চমীয়া দেশসমূহে ৰাছিয়াৰ তেলৰ ওপৰত বিভিন্ন নিষেধাজ্ঞা আৰোপ কৰাৰ ফলত ৰাছিয়াৰ ক্ৰুড তেল বেহাই মূল্যত বজাৰত উপলব্ধ হৈছিল। ভাৰতীয় শোধনাগাৰসমূহে সেই পৰিস্থিতিৰ সুবিধা লৈ ক্ৰয় বৃদ্ধি কৰে।

ফলত ৰাছিয়া ভাৰতৰ অন্যতম মুখ্য ক্ৰুড তেল যোগানকাৰী হৈ পৰে। ভাৰতৰ বৈদেশিক নীতিৰ মূল বক্তব্য অৱশ্যে কেৱল ৰাছিয়াৰ ওপৰত নির্ভৰশীল হোৱা নহয়। নতুন দিল্লীয়ে বিভিন্ন দেশ আৰু অঞ্চলৰ পৰা শক্তি আমদানি কৰি যোগানৰ উৎস বৈচিত্র্যময় কৰি ৰখাৰ নীতি গ্ৰহণ কৰিছে। বৈদেশিক পৰিক্ৰমা মন্ত্ৰালয়েও শেহতীয়াকৈ এই উৎস-বৈচিত্র্যকৰণৰ কথাই পুনৰ স্পষ্ট কৰিছে।

**আমেৰিকাৰ লক্ষ্য ৰাছিয়া, প্ৰভাৱ পৰিব পাৰে ভাৰততো**

ৱাশ্বিংটনৰ যুক্তি হৈছে-ৰাছিয়াৰ তেল আৰু গেছৰ পৰা লাভ কৰা ৰাজহৰ ওপৰত চাপ সৃষ্টি কৰি মস্কোৰ যুদ্ধ সক্ষমতা আৰু অর্থনৈতিক শক্তিক দুর্বল কৰা। সেই উদ্দেশ্যে ৰাছিয়াৰ সৈতে শক্তি বাণিজ্য কৰা তৃতীয় দেশসমূহকো চাপৰ আওতালৈ অনাৰ ব্যৱস্থা বিধেয়কখনত ৰখা হৈছে। আমেৰিকাৰ দৃষ্টিৰে এইটো ৰাছিয়াৰ ওপৰত অর্থনৈতিক চাপ বৃদ্ধিৰ কৌশল।

কিন্তু ভাৰতৰ দৃষ্টিকোণৰ পৰা বিষয়টো পৃথক। ভাৰতীয় শোধনাগাৰৰ বাবে তেলৰ মূল্য, যোগানৰ নির্ভৰযোগ্যতা আৰু দেশীয় চাহিদা পূৰণ-এইতিনিটা বিষয় মুখ্য। সেয়েহে কোনো এটা দেশৰ ভূ-ৰাজনৈতিক লক্ষ্যৰ সৈতে ভাৰতৰ শক্তি নীতি সম্পূর্ণৰূপে সংযুক্ত কৰা দিল্লীৰ বাবে সহজ নহয়।

**ভাৰত-আমেৰিকা সম্পর্কৰ নতুন পৰীক্ষা**

এই ঘটনাই ভাৰত-আমেৰিকা সম্পর্কৰ বাবেও নতুন পৰীক্ষা সৃষ্টি কৰিছে। দুয়োখন দেশৰ মাজত বাণিজ্য, প্ৰতিৰক্ষা, প্ৰযুক্তি, শক্তি আৰু ইণ্ডো-পেচিফিক সহযোগিতাৰ বিস্তৃত ক্ষেত্ৰ আছে। বৈদেশিক পৰিক্ৰমা মন্ত্ৰালয়ে ইতিমধ্যে ইংগিত দিছে যে নতুন আমেৰিকান ব্যৱস্থাৰ ভাৰত-আমেৰিকা সম্পর্ক আৰু আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় শক্তি বজাৰত সম্ভাব্য প্ৰভাৱৰ বিষয়ে আমেৰিকান পক্ষক পূর্বেই অৱগত কৰা হৈছিল। লগতে ভাৰতীয় বাণিজ্য আৰু অর্থনৈতিক স্বার্থ সুৰক্ষাৰ বাবে সকলো প্ৰয়োজনীয় পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰা হ'ব বুলিও স্পষ্ট কৰা হৈছে।

ইয়াৰ অর্থ সংঘাতৰ পথ বাছি লোৱা নহয়। বৰং দিল্লীৰ বাবে প্ৰত্যাহ্বান হৈছে-আমেৰিকাৰ সৈতে কৌশলগত সম্পর্ক অব্যাহত ৰাখিও ৰাছিয়াৰ সৈতে শক্তি সম্পর্ক, মধ্যপ্ৰাচ্যৰ যোগান আৰু দেশীয় শক্তিৰ চাহিদাৰ মাজত সামঞ্জস্য ৰক্ষা কৰা।

**আগত এতিয়া কূটনীতিৰ কঠিন পর্ব**

ৰাছিয়াৰ তেলক কেন্দ্ৰ কৰি আমেৰিকাৰ নতুন ব্যৱস্থাই বিশ্ব বাণিজ্যত ইয়াৰ প্ৰভাৱৰ বিষয়টোও পুনৰ উত্থাপন কৰিছে। কোনো বৃহৎ শক্তিয়ে শুল্ক বা নিষেধাজ্ঞাক বৈদেশিক নীতিৰ হাতিয়াৰ হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰিলে তাৰ প্ৰভাৱ কেৱল লক্ষ্য দেশতেই সীমাবদ্ধ নাথাকে; যোগান শৃংখল, তেলৰ মূল্য আৰু আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় বাণিজ্যতো পৰিব পাৰে।

ভাৰতৰ সম্মুখত সেয়ে দুটা সমান্তৰাল প্ৰয়োজনীয়তা-এফালে সুলভ আৰু নির্ভৰযোগ্য শক্তিৰ যোগান নিশ্চিত কৰা, আনফালে আমেৰিকা, ৰাছিয়া, মধ্যপ্ৰাচ্য আৰু অন্যান্য শক্তিৰ সৈতে কূটনৈতিক সম্পর্কৰ ভাৰসাম্য অটুট ৰখা।

বর্তমান পৰিস্থিতিত দিল্লীৰ বার্তা অৱশ্যে স্পষ্ট: শক্তি সুৰক্ষা বজাই ৰাখিবলৈ উৎস বৈচিত্র্যময় কৰা হ'ব, বিশ্ব বজাৰৰ পৰিস্থিতি অনুসৰি সিদ্ধান্ত লোৱা হ'ব আৰু দেশৰ বাণিজ্যিক তথা অর্থনৈতিক স্বার্থ সুৰক্ষিত কৰাৰ বাবে প্ৰয়োজনীয় পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰা হ'ব। ১০০ শতাংশ শুল্কৰ ক্ষমতা এতিয়া আমেৰিকাৰ হাতত থাকিলেও, ইয়াৰ প্ৰয়োগ আৰু পৰৱর্তী পৰিণতি এতিয়াও নির্ভৰ কৰিছে ৱাশ্বিংটনৰ পৰৱর্তী সিদ্ধান্তৰ ওপৰত।

# পাঠানকোটলৈ যোৱাৰ পথত ৰৱনীত বিট্টুৰ কনভয়ত আক্ৰমণৰ অভিযোগ

জন জন বিচাৰ
...চৰাইদেউ

বিজেপি নেতা তথা প্ৰাক্তন কেন্দ্ৰীয় মন্ত্ৰী ৰৱনীত সিং বিট্টুৰে অভিযোগ কৰিছে যে 'নশামুক্ত পঞ্জাব যাত্ৰা'ৰ আৰম্ভণি অনুষ্ঠানত অংশ ল'বলৈ পাঠানকোটলৈ যোৱাৰ সময়ত তেওঁৰ কনভয়ক লক্ষ্য কৰি আক্ৰমণ কৰা হয়। বিট্টুৰ দাবী অনুসৰি, তেওঁৰ নিৰাপত্তাৰক্ষী দলে আম আদমি পার্টী (আপ)ৰ সৈতে জড়িত বুলি সন্দেহ কৰা তিনিজন লোকক আটক কৰে। অৱশ্যে, এই অভিযোগৰ স্বতন্ত্ৰ নিশ্চিতকৰণ এতিয়াও হোৱা নাই।

বিট্টুৰে দাবী কৰে যে স্থানীয় আপ বিধায়কৰ নির্দেশত এই লোকসকলক তেওঁক যাত্ৰাত অংশগ্ৰহণৰ পৰা বাধা দিবলৈ পঠিওৱা হৈছিল। ঘটনাটোৰ তাৎক্ষণিক তদন্ত কৰাৰ লগতে ৰাজ্যখনত ৰাজনৈতিক নেতা আৰু কর্মীসকলৰ নিৰাপত্তা নিদ্ৰিশ্চত কৰিবলৈ তেওঁ পঞ্জাব চৰকাৰক দাবী জনায়। তেওঁ লগতে কয় যে তেওঁৰ সৈতে কোনো অঘটন ঘটিলে তাৰ




বাবে পঞ্জাবৰ মুখ্যমন্ত্ৰী আৰু আৰক্ষী সঞ্চালক প্ৰধান দায়ী হ'ব।

ঘটনাটোৰ সময়তে বিজেপিয়ে পঞ্জাবত 'নশামুক্ত পঞ্জাব যাত্ৰা' আৰম্ভ কৰিছে। দলটোৰ ঘোষিত কার্যসূচী অনুসৰি, এই যাত্ৰাই ৰাজ্যখনৰ ১১৭টা বিধানসভা সমষ্টি সামৰি প্ৰায় ৪,০০০ কিলোমিটাৰ পথ অতিক্ৰম কৰিব আৰু ৩০ ছেপ্টেম্বৰত জলন্ধৰত সামৰণি পৰিব। কেন্দ্ৰীয় গৃহমন্ত্ৰী অমিত শাহে সামৰণি অনুষ্ঠানত এখন জনসভাত অংশ লোৱাৰ কথা আছে।

বিজেপিৰ ৰাষ্ট্ৰীয় সভাপতি নীতিন নবীনে পাঠানকোটৰ পৰা যাত্ৰাৰ শুভাৰম্ভ কৰে। দলটোৱে পঞ্জাবৰ যুৱসমাজৰ মাজত বৃদ্ধি পোৱা নিচাজাতীয় দ্ৰব্যৰ সমস্যা, ইয়াৰ সামাজিক প্ৰভাৱ আৰু নেশামুক্তিৰ প্ৰয়োজনীয়তাক অভিযানটোৰ মূল বিষয় হিচাপে উত্থাপন কৰিছে।

ৰৱনীত বিট্টুৰ কনভয়ক লৈ উত্থাপিত অভিযোগে এতিয়া পঞ্জাবৰ ৰাজনীতিত নতুন বিতর্কৰ সৃষ্টি কৰিছে। বিজেপিয়ে ঘটনাটোক ৰাজনৈতিক নেতা-কর্মীৰ নিৰাপত্তাৰ সৈতে জড়িত গুৰুতৰ বিষয় হিচাপে উত্থাপন কৰি তদন্তৰ দাবী জনাইছে। আনহাতে, ঘটনাটোৰ প্ৰকৃত কাৰণ আৰু অভিযুক্তসকলৰ ভূমিকা তদন্ত সম্পূর্ণ হোৱাৰ পিছতহে স্পষ্ট হ'ব।

# ৰাম জন্মভূমি ৰায়ক লৈ স্বৰা ভাস্কৰৰ মন্তব্যত নতুন বিতর্ক



২০১৯ চনৰ অযোধ্যাৰ ৰাম জন্মভূমি-বাবৰি মছজিদ গোচৰৰ উচ্চতম ন্যায়ালয়ৰ ৰায়ক লৈ অভিনেত্রী স্বৰা ভাস্কৰে কৰা শেহতীয়া মন্তব্যই পুনৰ সামাজিক মাধ্যমত বিতর্কৰ সৃষ্টি কৰিছে। 'দ্য মিডনাইট আৱাৰ' পডকাষ্টত হোৱা কথোপকথনত ভাস্কৰে কয় যে ৰায়টো ঘোষণা হোৱাৰ পিছত তেওঁ অত্যন্ত অসন্তুষ্ট হৈছিল আৰু এগৰাকী হিন্দু হিচাপে তেওঁৰ 'লাজ' অনুভৱ হৈছিল। তেওঁ দাবী কৰে যে সেই সময়ত তেওঁ ফোনত থকা মুছলমান বন্ধুসকলক বার্তা পঠিয়াই ৰায়টোৰ সৈতে তেওঁ একমত নহয় বুলি জনাইছিল।

ভাস্কৰৰ মতে, সেই তালিকাত অভিনেতা শ্বাহৰুখ খান, আমিৰ খান আৰু ছলমান খানৰ লগতে তেওঁৰ স্বামী ফহাদ আহমদো আছিল। তেওঁ কয় যে ৰায়টোৰ পিছত তেওঁ নিজৰ মুছলমান বন্ধুসকলৰ সৈতে যোগাযোগ কৰি তেওঁলোকক জনাব বিচাৰিছিল যে ৰায়টোৰ সৈতে তেওঁৰ ব্যক্তিগতভাৱে সহমত নাই। এই মন্তব্য প্রকাশ পোৱাৰ পিছতে সামাজিক মাধ্যমত বিভিন্ন ধৰণৰ প্রতিক্রিয়া দেখা গৈছে-কোনোবাই তেওঁৰ মতামতক সমালোচনা কৰিছে, আনহাতে আন একাংশই ইয়াক তেওঁৰ ব্যক্তিগত মত প্রকাশৰ অধিকাৰ হিচাপে দেখিছে।

**২০১৯ৰ ঐতিহাসিক ৰায়টো কি আছিল ?**

অযোধ্যাৰ ভূমি-বিবাদৰ ওপৰত উচ্চতম ন্যায়ালয়ে ২০১৯ চনৰ ৯ নৱেম্বৰত সর্বসম্মতিক্রমে ৰায় প্রদান কৰিছিল। পাঁচজনীয়া বিচাৰপীঠে বিবাদিত ২.৭৭ একৰ ভূমি ৰাম মন্দিৰ নির্মাণৰ বাবে গঠন হ'বলগীয়া ন্যাসৰ হাতত অর্পণ কৰাৰ নির্দেশ দিয়ে। একে সময়তে মছজিদ নির্মাণৰ বাবে সুন্নী কেন্দ্রীয় ৱাকফ ব'র্ডক অযোধ্যাত পাঁচ একৰ বিকল্প ভূমি দিয়াৰ নির্দেশো দিয়া হৈছিল।

এই ৰায় আছিল বহু দশক ধৰি চলি অহা এক জটিল মালিকানা-বিবাদৰ আইনী নিষ্পত্তিৰ এক গুৰুত্বপূর্ণ অধ্যায়। আদালতৰ ৰায় আৰু কোনো ব্যক্তিৰ ব্যক্তিগত ৰাজনৈতিক বা সামাজিক মূল্যায়ন-এই দুয়োটা বিষয় পৃথক। স্বৰা ভাস্কৰে শেহতীয়াকৈ প্রকাশ কৰা অনুভূতিয়ে সেই সময়ৰ ৰায়ক লৈ সমাজত থকা বিভিন্ন মত আৰু প্রতিক্রিয়াৰ কথাই পুনৰ চর্চালৈ আনিছে।

**বিতর্কৰ কেন্দ্রত অভিনেত্রীগৰাকী**

স্বৰা ভাস্কৰ পূর্বেও সামাজিক আৰু ৰাজনৈতিক বিষয়ত স্পষ্ট মত প্রকাশ কৰাৰ বাবে চর্চাত আহিছে। এইবাৰ অযোধ্যা ৰায় সন্দর্ভত তেওঁৰ মন্তব্যই সামাজিক মাধ্যমত নতুন বিতর্কৰ সূচনা কৰিছে। বিশেষকৈ 'এগৰাকী হিন্দু হিচাপে লাজ পাইছিলোঁ' বুলি তেওঁ কৰা মন্তব্যক লৈ বিভিন্ন মত প্রকাশ পাইছে। অৱশ্যে সামাজিক মাধ্যমত হোৱা মন্তব্যসমূহ ব্যক্তিগত প্রতিক্রিয়া; সেইবোৰক সামগ্রিক জনমত হিচাপে গণ্য কৰিব নোৱাৰি।

পডকাষ্টটোত ভাস্কৰে তেওঁৰ ব্যক্তিগত জীৱনৰ বিষয়তো কথা কয়। তেওঁ আৰু ফহাদ আহমদে প্রকাশ কৰা মতে, জেএনইউৰ প্রাক্তন ছাত্রনেতা তথা গৱেষক উমৰ খালিদে দুয়োৰে পৰিচয় ঘটোৱাত ভূমিকা লৈছিল। ভাস্কৰে তেওঁক 'কিউপিড' বুলি উল্লেখ কৰে। দুয়োৰে পৰিচয় নাগৰিকত্ব সংশোধনী আইনবিৰোধী আন্দোলনৰ সময়ত হোৱা বুলি প্রতিবেদনসমূহত উল্লেখ কৰা হৈছে।

অযোধ্যা ৰায়ক লৈ ভাস্কৰৰ শেহতীয়া বক্তব্যই আকৌ এবাৰ এটা পুৰণি প্রশ্নক ৰাজহুৱা আলোচনাৰ কেন্দ্রলৈ আনিছে-ঐতিহাসিক আৰু ধর্মীয়ভাৱে স্পর্শকাতৰ বিষয়ত এগৰাকী জনপ্রিয় ব্যক্তিৰ ব্যক্তিগত মতামতে কিমানদূৰ সামাজিক বিতর্কক প্রভাৱিত কৰে ? মত প্রকাশৰ অধিকাৰ গণতন্ত্রৰ এক গুৰুত্বপূর্ণ অংশ যদিও এনে বিষয়ত তথ্য, আদালতৰ নথি আৰু ব্যক্তিগত মতামতৰ মাজৰ পার্থক্য স্পষ্ট ৰখাটোও সমানে গুৰুত্বপূর্ণ।

# সীতাৰ চৰিত্রক লৈ ট্রে'লিং, অঞ্জলি আৰোৰাৰ স্পষ্ট উত্তৰ-'মই লজ্জিত নহয়'

'মহাকাব্য শ্রী ৰামায়ণ কথা' ছবিত মাতৃ সীতাৰ চৰিত্রত অভিনয় কৰাৰ পিছৰে পৰা সামাজিক মাধ্যমত সমালোচনা আৰু ট্রে'লিঙৰ সম্মুখীন হৈ অহা অভিনেত্রী অঞ্জলি আৰোৰাই অৱশেষত বিষয়টোক লৈ মুখ খুলিছে। ছবিখনৰ প্রচাৰ অনুষ্ঠানত তেওঁ স্পষ্ট কৰি দিয়ে যে এই সমালোচনাই তেওঁক ব্যক্তিগতভাৱে দুখী কৰা নাই আৰু এগৰাকী অভিনেত্রী হিচাপে দিয়া চৰিত্রটোত তেওঁ নিজৰ সম্পূর্ণ সামর্থ্য প্রয়োগ কৰিছে।



অঞ্জলিয়ে কয় যে তেওঁ এগৰাকী ৰাজহুৱা ব্যক্তি আৰু দর্শকৰ তেওঁৰ অভিনয় ভাল বা বেয়া লগাটো স্বাভাৰিক। তেওঁৰ মতে, ট্রেইলাৰ চাই দর্শকে সিদ্ধান্ত লোৱাৰ অধিকাৰ ৰাখে, কিন্তু তেওঁৰ ব্যক্তিগত জীৱন আৰু পর্দাত অভিনয় কৰা চৰিত্র-এই দুয়োটাক একে দৃষ্টিৰে চোৱা উচিত নহয়। তেওঁ দর্শকক তেওঁৰ ব্যক্তিত্বৰ পৰিৱর্তে ছবিখনত সীতাৰ চৰিত্রটো কেনেদৰে উপস্থাপন কৰা হৈছে, সেই দিশটো লক্ষ্য কৰিবলৈ আহ্বান জনায়।

অঞ্জলি আৰোৰা সামাজিক মাধ্যমত 'কাঁচা বাদাম' গীতত কৰা নৃত্যৰ ভিডিঅ'ৰ জৰিয়তে ব্যাপকভাৱে পৰিচিত হৈছিল। সেই পুৰণি ভিডিঅ'ৰ পৰিচয় এতিয়াও তেওঁৰ সৈতে জড়িত হৈ থকাক লৈও তেওঁ মত প্রকাশ কৰে।

তেওঁ কয় যে সামাজিক মাধ্যমৰ ধাৰা সময়ৰ সৈতে সলনি হয় আৰু সেই সময়ত তেওঁ কেৱল আন বহুজনৰ দৰে এটা জনপ্রিয় ধাৰা অনুসৰণ কৰি ভিডিঅ' বনাইছিল। সেই ভিডিঅ'ৰ জৰিয়তে পৰিচিত হোৱাৰ বাবে তেওঁ কৃতজ্ঞ যদিও সেই এটা ভিডিঅ' বা পৰিচয় তেওঁৰ সম্পূর্ণ জীৱন নহয় বুলি স্পষ্ট কৰে।



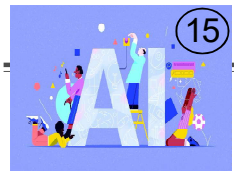


VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR

Guwahati, Friday, 18 September 2026




# TMC Name and Symbol Frozen

## 'Vote Theft, Government Theft, Now Party Theft'

**Rahul Gandhi Raises Alarm Over Election Commission Order**



Jan Jan Vichar
…✍New Delhi

A fresh political controversy has erupted in West Bengal after the Election Commission of India issued an interim order freezing the use of the All India Trinamool Congress name and its traditional 'Jora Phool' (twin flowers) symbol in the upcoming Assembly bypolls. The decision comes amid a dispute between rival factions claiming the party's identity and electoral symbol.

The Commission has directed the rival factions to submit alternative names and symbols for the bypolls. The order is interim in nature and does not amount to a final determination of which faction has the legitimate claim over the party's original identity and symbol.

Reacting sharply to the development, Congress leader and Leader of Opposition in the Lok Sabha Rahul Gandhi accused the BJP and the Election Commission of working together to weaken political parties. In a post on X, Gandhi said the issue was not merely a fight concerning Mamata Banerjee but involved every political party and voter who wants free and fair elections.

Gandhi described the development using the phrase "vote theft, government theft, now party theft" and alleged that a similar pattern had emerged in earlier disputes involving the Shiv Sena and the Nationalist Congress Party. These are political allegations made by Gandhi and have not been established as findings against the Election Commission or BJP.

**Why the TMC Symbol Matters**

For decades, the twin-flower symbol has been closely associated with the Trinamool Congress and Mamata Banerjee's political identity in West Bengal. The Commission's interim order means that neither of the rival factions can use the original party name and reserved symbol in the affected bypolls while the dispute remains unresolved.

The immediate issue is therefore not simply a dispute over a symbol. It raises questions about how election symbols and party identities should be handled when competing groups claim to represent the same political organisation.

The Trinamool Congress has reportedly submitted alternative names and symbols to the Election Commission, doing so under what it described as its strongest protest.

**A Test of Political Identity and Electoral Clarity**

The development has added another layer to the political contest in West Bengal. For voters, an election symbol is often a crucial means of identifying a political party on the ballot. The Commission's interim arrangement is aimed at avoiding confusion during the bypolls while the competing claims are considered.

The controversy also places the spotlight on the larger question of the Election Commission's role in resolving disputes over party names and symbols. Gandhi and other opposition leaders have questioned the Commission's handling of the matter, while the legal and electoral process will ultimately determine how the dispute over the TMC's identity is resolved.

For now, the 'Jora Phool' symbol remains frozen for the upcoming bypoll process, while both factions face the task of contesting under alternative names and symbols. The larger battle over who can legitimately claim the Trinamool Congress identity, however, remains unresolved.

# PM Modi's Gifts Worth Millions Put Up for E-Auction; 1,498 Memorabilia Items on Offer

Jan Jan Vichar
…✍New Delhi



More than 1,400 memorable gifts and mementoes received by Prime Minister Narendra Modi are up for auction as part of the eighth edition of the PM Mementos e-auction. The auction began on Thursday, September 17, marking the Prime Minister's 76th birthday, and will remain open until October 31, coinciding with Gandhi Jayanti.

Among the most valuable items on offer are a silver idol of Lord Ram from Karnataka, carrying a base price of Rs 13.5 lakh, a silver replica of the Kakatiya Kala Thoranam, or Warangal Gate, priced at Rs. 9 lakh, and a 'Tree of Life' Gond painting, with a base price of Rs 7.5 lakh.

According to the Ministry of Culture, a total of 1,498 mementoes have been listed in this edition, including 50 specially identified items representing some of the most distinctive pieces in the collection. The catalogue includes traditional handicrafts, sculptures, paintings, sports memorabilia and other works reflecting India's cultural diversity. Members of the public can participate in the online auction by registering through the official PM Mementos portal. The collection can also be viewed at the National Gallery of Modern Art in New Delhi. The proceeds from the auction will be donated to the 'Namami Gange' programme, which focuses on the conservation and rejuvenation of the Ganga. According to Culture and Tourism Minister Gajendra Singh Shekhawat, the previous seven editions saw 7,441 items auctioned, generating around Rs 52 crore. The funds were dedicated to the Namami Gange initiative. The auction has once again turned gifts presented to the Prime Minister into a public fundraising initiative, while also giving collectors and members of the public an opportunity to acquire items associated with India's political and cultural life.

# Northeast Can Become a New Engine of India's Growth: Himanta

Jan Jan Vichar
…✍New Delhi



Assam Chief Minister pitches the region's vast development potential at ICC Global Business Summit 2026, urges businesses to explore opportunities across the Northeast

Assam Chief Minister Himanta Biswa Sarma has called for greater business attention to Northeast India, highlighting the region's potential to make a significant contribution to the country's broader economic growth.

Speaking at the ICC Global Business Summit 2026, Sarma described the gathering as an important platform for presenting the Northeast's development possibilities to a wider business and investment audience. He stressed that the region should be viewed not merely as a geographically distinct part of India, but as an important contributor to the country's future growth trajectory.

Sarma said the development of the Northeast could provide a substantial boost to India's overall economic progress. He also invited businesses and entrepreneurs to explore opportunities in the region, signalling the need for wider private-sector engagement with the northeastern states.

The Chief Minister underlined the importance of continued national attention towards the Northeast and referred to Prime Minister Narendra Modi's focus on the region. According to Sarma, platforms such as the ICC summit provide an opportunity to bring the Northeast's economic potential into the national business conversation.

The region possesses significant opportunities across sectors, including infrastructure, tourism, agriculture, connectivity, natural resources, manufacturing and entrepreneurship. Greater investment and stronger business networks could, in turn, create employment and expand economic activity across the northeastern states.

Sarma's remarks come at a time when connectivity and infrastructure development have increasingly become central to discussions on the Northeast's economic future. Improved links with the rest of India and neighbouring countries are also being viewed as important for expanding markets and trade opportunities.

For Assam, which serves as a major gateway to the Northeast, greater business participation could have wider regional implications.

The Chief Minister's message at the summit was therefore aimed at taking the Northeast's economic story beyond the region and placing its opportunities before a much larger business community.

The ICC Global Business Summit thus became a platform for Assam to make a clear pitch: the Northeast's development is closely linked with India's larger growth ambitions, and the region needs greater business engagement to realise that potential.

# Better India-China Ties Could Open New Doors for Arunachal Pradesh : Pema Khandu

Jan Jan Vichar
…✍Itanagar

Arunachal Pradesh Chief Minister Pema Khandu has welcomed the recent emphasis on improving cooperation between India and China, saying better bilateral relations could have significant implications for the development of the border state.

Khandu pointed to Arunachal Pradesh's more than 1,200-km border with China, saying the state could particularly benefit from greater cooperation in areas such as connectivity, trade and people-to-people exchanges.

His remarks follow the meeting between Prime Minister Narendra Modi and Chinese President Xi Jinping on the sidelines of the BRICS Summit in New Delhi on September 12. The two leaders discussed improving bilateral relations, expanding economic and people-to-people ties, and maintaining peace and tranquillity along the border.

The BRICS New Delhi Declaration also reaffirmed the participating countries' commitment to cooperation, connectivity and mutually beneficial development.



For Arunachal Pradesh, improved regional connectivity and greater economic engagement could carry particular significance because of its strategic location and proximity to international borders. Better relations between India and China could potentially create space for expanded economic and cultural exchanges, subject to the broader diplomatic framework between the two countries.

However, the prospects for closer cooperation remain linked to the longstanding boundary issue. India and China continue to have unresolved differences over their border, and New Delhi has consistently maintained that peace and tranquillity in border areas are essential for the continued development of bilateral relations.

There have also been signs of renewed military-level engagement. According to the Ministry of External Affairs, senior military commander-level flag meetings in the eastern sector have resumed, including a meeting at Wacha in Arunachal Pradesh on September 6.

Khandu's remarks therefore come against a backdrop of cautious diplomatic engagement. While the state could stand to gain from improved connectivity, trade and cross-border people-to-people ties, the larger India-China relationship continues to depend on progress in maintaining peace along the border. For Arunachal Pradesh, the emerging message is clear: better bilateral relations could create new development opportunities, but lasting peace and stability remain a key condition for turning those possibilities into reality.

# India Signals Strong Support for Nepal's Flood Reconstruction

Jan Jan Vichar
…✍New Delhi



India has indicated that it will continue to support Nepal's recovery and reconstruction efforts following the devastating Bhotekoshi floods, with Finance Minister Nirmala Sitharaman telling her Nepali counterpart Swarnim Wagle that India would assess Nepal's needs before deciding the extent of its assistance.

Wagle, on his first foreign visit as Nepal's finance minister, met Sitharaman in New Delhi on Thursday and sought Indian support for rebuilding infrastructure damaged by last month's floods. According to officials present at the meeting, Wagle requested a reconstruction grant but did not specify a particular amount. Sitharaman responded positively, saying a decision would be taken after Nepal completes its Post-Disaster Needs Assessment.

The scale of the reconstruction challenge is substantial. A rapid assessment by Nepalese authorities has estimated recovery and reconstruction requirements at around Rs 723.31 billion, with infrastructure accounting for roughly three-fourths of the estimated bill. Roads, hydropower facilities, homes and essential services were among the areas badly affected.

The discussions between Wagle and Sitharaman went beyond immediate disaster assistance. The two sides discussed strengthening economic ties, improving connectivity, expanding trade and investment, and increasing people-to-people exchanges. Energy cooperation and the use of Indian lines of credit were also part of the broader economic discussions.

**A Relationship Tested by Crisis**

India's support comes against the backdrop of a long history of assistance to Nepal during major crises. Following the 2015 earthquake, India pledged $1 billion for reconstruction, comprising grants and concessional loans. Nepal is now also discussing how to make use of portions of earlier credit commitments, including potentially redirecting them towards the energy sector.

Wagle has said Nepal is not currently seeking a fixed amount from India. Instead, Kathmandu is looking for support comparable to the assistance it received after the 2015 earthquake, particularly as the country reassesses its reconstruction priorities following the Bhotekoshi disaster.

The latest talks therefore carry significance beyond relief and reconstruction. For India, support for Nepal's recovery also intersects with a broader economic partnership involving trade, investment, energy and cross-border connectivity.

The two governments have indicated that stronger connectivity and economic cooperation can deepen commercial ties and people-to-people exchanges. Wagle's visit also includes meetings with Indian policymakers and business leaders, where Nepal is expected to seek greater investment and discuss measures aimed at facilitating business activity.

**From Disaster Relief to Long-Term Recovery**

The immediate priority, however, remains rebuilding communities and infrastructure damaged by the floods. Nepal's government is conducting a detailed assessment to determine the resources required before approaching international partners for additional support.

For India and Nepal, the reconstruction effort could become another test of their longstanding bilateral relationship. New Delhi has already provided relief supplies and technical assistance during rescue and relief operations, while Kathmandu has acknowledged that support.

The message emerging from the New Delhi talks is therefore one of continued partnership, but with assistance tied to a clearer assessment of Nepal's needs.

As Nepal begins the difficult task of rebuilding after the floods, India's response could become an important component of that recovery-while the wider discussions on trade, energy, connectivity and investment point towards a broader effort to strengthen the two neighbours' economic relationship.

# Late Wish, Quick Reply: Tarique Rahman Reaches Out to Modi as India-Bangladesh Ties Enter New Phase



**New Delhi:** Bangladesh Prime Minister Tarique Rahman extended birthday greetings to Prime Minister Narendra Modi on Thursday, wishing him good health and continued strength in serving the people of India. Rahman's message came late in the evening, while Modi responded shortly afterwards, thanking the Bangladeshi leader and saying he "deeply appreciate[d]" his kind words.

The brief exchange comes as India-Bangladesh relations enter a new phase following the political changes in Dhaka. Both sides have indicated the importance of maintaining communication, although several issues-including trade, border management, water sharing and the presence of former Bangladesh Prime Minister Sheikh Hasina in India-remain part of the wider bilateral agenda."

Rahman's government has shown interest in engaging with New Delhi, while India has also kept diplomatic channels open. The two countries share close geographical, economic and people-to-people links, making stable relations important for both sides.

The birthday messages do not by themselves signal a policy change, but they underline the continuing channel of communication between the two governments as New Delhi and Dhaka navigate a changing diplomatic landscape.

EDITORIAL

## Finding Zubeen One Year On

A year after Zubeen Garg's death, Assam continues to remember him through songs, photographs, performances and personal memories. Yet the more difficult question remains: have we really understood the man behind the legend?

Zubeen was never a simple personality. He was an artist of immense creativity, but also a human being marked by contradictions, vulnerabilities, freedom and restlessness. In remembering him, there is a danger of turning a complex individual into a flawless symbol. That may preserve an image, but it can obscure the person.

Two conversations discussed in the original essay—one with Rita Choudhury and another with musician Utpal Sarma—offer different windows into Zubeen's world. One helps us understand his life and experiences; the other offers glimpses into the creative environment that shaped his music. Neither needs to be treated as the final explanation of who he was.

Perhaps the most important lesson is that understanding another human being requires humility. We often convert metaphors into conclusions, contradictions into labels and memories into convenient narratives. But an artist's mind cannot always be reduced to biography.

Zubeen's enduring legacy should therefore not be confined to memorials or nostalgia. It should live through new musicians, experimentation, opportunities for young artists and the continuing evolution of Assamese music.

One year on, perhaps the best tribute is not to complete the story of Zubeen Garg, but to keep listening. The captain, the sea and the distant lighthouse can remain symbols without demanding an immediate explanation. Sometimes, respecting another mind begins with accepting that we may never fully know it.

# A Seasoned Modi's Brics Balancing Act

Jan Jan Vichar
...✍ Parsa Venkateshwar Rao Jr

The 18th Brics Summit held in New Delhi with India in the chair has been the most un-Modi-like international conference of the last 12 years. It served as a contrast to the G-20 Summit that India and Prime Minister Narendra Modi hosted in September 2023. This summit did not reverberate with the empty rhetoric of "vasudhaiva kutumbakam" that has been the signature of Mr Modi. The Prime Minister's speech at the Summit was sober in tone, and matter of fact. It carried substantial suggestions, including that of creating a permanent implementation structure because the presidency rotates annually, and decisions taken in one summit need to be carried forward. The pyramid simile was effective where he compared the Global South placed at the base of the pyramid and the decision-makers with power and pelf at the top, and how the structure needs to be modified. There was no hint that the pyramidal structure needs to be replaced. The diplomatese is impressive.

There was also not much fanfare surrounding the summit even as the leaders of the many countries flew into the Indian capital. Life went on, with a few traffic diversions, as usual. There were the customary hoardings announcing the summit and a few featuring the Prime Minister. But it was not in-your-face stuff. Twelve years in power seems to have mellowed the PM and the government. The Rameswaram temple corridor which served as the background at the entrance where Mr Modi welcomed the guests remained an inconspicuous backdrop. There was no effort to flaunt India's cultural riches. Trump's Ukraine gambit to make Europe the real loser Discover more Compare E-Readers Stream History Documentaries Send Money Overseas Psychologists of power will have much work to do explaining the change in the Modi style, which leaned a little too much on vulgar pomp. It never reached the heights of grandeur. Political analysts might suggest that the Gen Z rebellion has been a pushback to the overconfidence and swagger of the Prime Minister and his aides, and he is not riding his hobbyhorse of India, the vishwaguru. Perhaps the most relevant factor about the Brics Summit this time round is that the war in West Asia has turned pretty grim on both the battlefront as well as the economic front. Iran, Saudi Arabia and the United Arab Emirates, who are on opposite sides of the conflict, were present at the summit, and what was needed was a balancing act. Mr Modi had reached out to Iranian President Masoud Pezeshkian with respect and friendliness. Though the Indian media juxtaposed Mr Modi's greetings to his friend and Israeli Prime Minister Benjamin Netanyahu on the occasion of the Jewish New Year with its coverage of the summit, it did not in any way cast a shadow on the Modi-Pezeshkian meeting.

> Psychologists of power will have much work to do explaining the change in the Modi style, which leaned a little too much on vulgar pomp.

Mr Modi and India showed diplomatic restraint in including the condemnation of Israel over the violence in Gaza, and also support for South Africa's move against Israel in the International Criminal Court. It must have been a bitter pill to swallow for Mr Modi and the pro-Israel lobby in the government, but it must have been felt that in a large grouping like that of Brics, there is need to accommodate views and positions that India does not like. The omission of the Russia-Ukraine war is a clear signal that Brics, including India, consider the Russia-Ukraine as a European war. The situation in West Asia is something that impacts most members of Brics, including Russia because of Moscow's ties with Tehran.

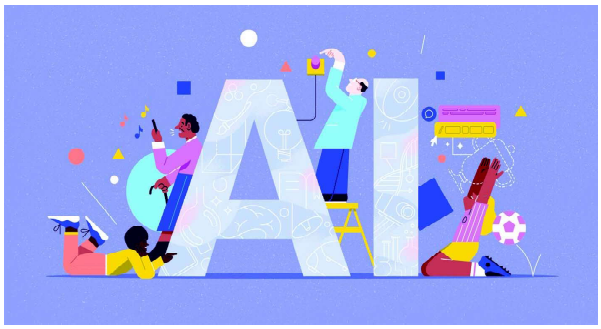
Winning strategies India and Mr Modi had to do a difficult balancing act because the presence of rivals at the summit was quite prominent. Apart from Iran, Saudi Arabia and the UAE, Egypt and Ethiopia were not on the same page either. China was in many ways the Big Brother in the room with its gargantuan economy but it was held in its place. The Modi-Xi Jinping bilateral did not overshadow the summit unlike the case with the India-Pakistan bilateral at the Saarc summit in Islamabad in 2004. Even the mention of the Pahalgam terror attack in the joint declaration did not overshadow it in the Indian media. It was a skillful conducting of the Brics orchestra this time. There were different notes from the different corners, and they all had to be fitted in if not integrated. Mr Modi and India handled the challenge successfully. To do so, India had to be less dominant and also predominant. Given Mr Modi's penchant for the personalised diplomacy, it was against the grain for him to maintain a relatively subdued profile. Mr Modi was quieter, dignified, yet quite firm and articulate about the agenda. The agenda was not about India, but the role India is to play in Brics by showing the way. The focus was on Brics, and the Prime Minister pulled it off. He played the quiet host and not the role of the prominent man in the room. So much so, that the Chinese President Xi recalled his first visit to India when Mr Modi took him to his hometown, Ahmedabad, which had coincided with his birthday. Of course, Mr Xi is a shrewd leader and he does not let praise escape his lips lightly. He knows that China would need to keep India humoured on the trade front despite the fact of its overwhelming trade surplus with India. The Indian media did not go overboard with Mr Xi's praise for Mr Modi. Everyone exercised restraint. The point has become clear that the world is going through a troubled time on many fronts. Peace and trade had to pushed with eyes on the ground. Mr Modi talked about the free sea lanes by giving it a nice human touch when he said that there should be a system of responding to sailors in distress and the concerned national maritime authorities should shoulder the responsibility. It was a nice diplomatic googly. This is evidenced that Mr Modi has become a seasoned international leader who can handle himself with ease if Mr Pezeshkian and Mr Netanyahu were to be in the same room.

## From College Projects to Freelancing

# AI Is Helping Gen Z

For today's Gen Z, artificial intelligence is rapidly moving from being a futuristic technology to becoming an everyday career and learning tool. From preparing college projects and analysing documents to creating content, writing code and conducting research, young people are increasingly using AI to work faster and explore new opportunities.

Just as earlier generations embraced computers, the internet and smartphones to build new skills, today's students and young professionals are turning to AI to keep pace with a rapidly changing job market.




**AI as a Study Partner**

AI tools can help students organise information, understand difficult concepts, generate ideas and analyse lengthy documents. Tools such as ChatGPT, Perplexity and Claude are also being used for research, brainstorming, coding and content creation.

But the real advantage comes when students use AI as a learning assistant rather than simply copying its answers. Verifying information, understanding the reasoning behind an answer and developing one's own ideas remain essential.

**From Skills to Freelance Income**

The growth of the gig economy has created another opportunity. Young freelancers can use AI-assisted workflows for services such as content writing, research, presentation development, coding, data analysis, documentation and digital marketing. AI can reduce the time required for repetitive tasks, allowing freelancers to concentrate more on problem-solving, creativity and client requirements. For example, a freelancer can use AI to analyse a large document, identify key information and prepare an initial draft before adding human judgment and expertise.

The result is not simply faster work-it can allow an individual with the right skills to offer services that previously required a larger team.

**The New Career Skill Knowing How to Use AI**

AI itself is not a substitute for professional expertise. The growing advantage lies in knowing how to ask the right questions, verify results, improve AI-generated output and combine technology with human creativity.

For Gen Z, this means that learning AI tools could become as important as learning conventional software skills. Students who understand both their chosen profession and the technology supporting it can potentially build stronger portfolios and explore new forms of freelance work.

# SSC CPO 2026: Don't Chase the Cut-Off, Aim for a High Score

For thousands of aspirants preparing for the SSC CPO 2026 examination, clearing the cut-off should not be the ultimate goal. Candidates aiming for Delhi Police and Central Armed Police Forces (CAPFs) Sub-Inspector posts need to think beyond the minimum qualifying marks and build a preparation strategy focused on achieving a high score.

A common mistake among aspirants is to concentrate almost entirely on Paper-I and assume that a strong performance there guarantees final selection. However, the recruitment process also places significant emphasis on Paper-II and subsequent stages, including medical fitness. Experts therefore advise candidates to target a score comfortably above the expected cut-off rather than preparing merely to cross the qualifying line.

**Begin With Previous-Year Papers**

Instead of starting preparation simply by reading the syllabus, candidates should first analyse previous-year question papers. This helps them understand the examination pattern, difficulty level, frequently tested topics and the manner in which familiar concepts are presented.

Previous papers also reveal which areas can become reliable scoring opportunities and which ones may consume valuable examination time.

**Identify Scoring Areas and Time Traps**

Every candidate should maintain two lists: scoring areas and time traps. Scoring areas are topics from which questions can be solved quickly and accurately. Time traps are questions or chapters that may appear familiar but consume disproportionate amounts of time.

Regular mock tests are particularly useful for identifying these weaknesses. In Reasoning, candidates can classify questions into three categories-those that can be solved immediately, those requiring moderate thought and those likely to consume considerable time. This classification can eventually make question selection during the actual examination much more instinctive.

**Learn Patterns, Not Just Shortcuts**

Shortcuts can improve speed, but they should not be applied mechanically to every question. Candidates should instead learn to recognise the structure of a problem.

For topics such as percentage, ratio, profit and loss, number system and algebra, maintaining a pattern register can be highly effective. For every question type, candidates can note how to identify the pattern, the shortest method of solving it and the common mistakes associated with it. Over time, this approach can improve both speed and accuracy.

**Give English a Dedicated Place in Preparation**

Paper-II preparation requires more than memorising grammar rules. Candidates should regularly practise Reading Comprehension, Cloze Tests, Error Detection and Sentence Rearrangement.

Reading quality newspaper editorials can help improve comprehension speed, vocabulary and familiarity with formal English. Rather than memorising isolated words, aspirants should also maintain lists of commonly used word combinations, collocations and fixed prepositions. Such practice can prove useful in cloze tests and sentence-based questions.

**Strengthen the GK Base**

For General Knowledge, candidates should focus on areas such as the Indian Constitution, important constitutional Articles and modern Indian history. Static GK should include art and culture, classical dances, musical instruments and other frequently tested subjects.

For current affairs, aspirants should systematically cover major developments from the previous six to eight months, along with important government schemes and national developments.

The larger lesson for SSC CPO aspirants is simple: preparation should be designed not merely to survive the cut-off but to maximise marks. A combination of previous-paper analysis, targeted practice, mock-test evaluation, time management and subject-wise revision can help candidates enter the examination with a clear scoring strategy.

# Tulsi is Not Offered to Lord Ganesha

## The Story Behind a Unique Puja Tradition



Ganesh Utsav is a time of devotion, celebration and elaborate rituals. Across homes and temples, devotees worship Lord Ganesha with flowers, Durva grass, Shami leaves, sandalwood and traditional offerings. Among the many customs associated with Ganesh worship, one stands out: Tulsi leaves are traditionally not offered to Lord Ganesha.

The reason comes from a Puranic legend associated with Tulsi and Ganesha. According to the traditional story, Tulsi once expressed her desire to marry Ganesha. Ganesha declined the proposal, choosing a different path. Angered by his refusal, Tulsi is said to have cursed Ganesha that he would marry twice.

Ganesha, in turn, became angry and cursed Tulsi that she would marry an asura. Tulsi later regretted her words and sought forgiveness. Ganesha then softened the curse, saying that Tulsi would become especially dear to Lord Vishnu and would have an important place in Vishnu worship. However, he declared that Tulsi would not be used in his own worship. It is this legend that is traditionally cited as the reason for avoiding Tulsi leaves during Ganesha puja.

**What Is Offered to Ganesha?**

Devotees commonly offer Durva grass, red flowers, Shami leaves, Bilva leaves, sandalwood, incense, lamps and sweets. Modak, regarded as one of Ganesha's favourite offerings in popular tradition, is especially associated with the festival.

A simple puja can begin with cleaning the place of worship and bathing the idol or image of Ganesha. Devotees may then offer clothing, sandalwood or roli for tilak, flowers and Durva, followed by homemade sweets or Modak as naivedya. Incense and a lamp are lit before the aarti.

Devotees may chant traditional mantras such as "Shri Ganeshaya Namah" and "Om Gam Ganapataye Namah", followed by prayers and a request for forgiveness for any mistakes made during worship.

**A Tradition Rooted in Devotion**

The Tulsi-Ganesha story is part of the rich body of Hindu religious tradition in which symbolic stories explain ritual practices. For devotees, the custom is less about prohibition and more about preserving a tradition passed down through generations.

As Ganesh Utsav continues until September 25, the practice offers a reminder that Hindu worship is also shaped by stories, symbolism and regional traditions-each adding another layer of meaning to the celebration of Lord Ganesha.

# Radha Ashtami : What to Eat, What to Avoid

Radha Ashtami, celebrated as the birth anniversary of Radha Rani, will be observed on September 19, 2026. Devotees mark the occasion with special prayers, devotional chanting and fasting. Traditional vrat practices also prescribe certain dietary restrictions, although customs can vary among families and religious traditions.



**What Can Devotees Eat?**

According to traditional vrat practices, devotees observing Radha Ashtami may take fruits, milk, curd, fresh juices and dry fruits during the fast. Those unable to observe a strict fast may follow a lighter form of fasting according to their capacity and family tradition. Many devotees avoid regular grains during the fast and prefer phalahar. Some traditions permit a single meal or limited use of salt, while others observe a stricter fast.

**What Should Be Avoided?**

Traditional observances generally recommend avoiding grains and tamasic foods during the vrat. Onion and garlic are commonly avoided by devotees following a strict sattvic diet. he emphasis is not merely on food but also on maintaining a devotional atmosphere through prayer, restraint and remembrance of Radha Rani.

**How Is the Fast Traditionally Broken?**

The timing of parana-breaking the fast varies according to local customs and individual religious practice. Some devotees break the fast after sighting the stars or moon, while others do so after sunrise or after completing the prescribed worship. A traditional method involves bathing the deity with Panchamrit during the afternoon worship and offering clothes and other devotional items. Devotees following this practice may first take charanamrit when breaking the fast and then have their meal.






Printed & Published by Purvanchal Prints, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati-781005 Contact: 69001 26012
Email : Official.janjanvichar@gmail.com, Website : www.janjanvichar.in ● Executive Editor : Subhash Kumar Choudhary ● Editor : Dhaneshwar Choudhary